25/-₹

हिन्दी साप्ताहिक

विश्वकर्मा किरण

वर्ष-20 अंक-28 जौनपुर 28 जुलाई, 2019 http://www.vishwakarmakiran.com

विश्वकर्मावंशीय महान शिक्षा ऋषि वीतराग स्वामी कल्याणदेव महाराज के नाम पर

कल्याणदेव भागवत भवन

https://www.facebook.com/VishKiranNews/ https://twitter.com/VishKiranNews https://www.linkedin.com/in/vishkirannews/

मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी, दैवज्ञ
ये पाँचो सर्वज्ञ

UNITED WE STAND
DIVIDED WILL FALL

विभाजित होकर गिरने से अच्छा है
संयुक्त होकर खड़े रहना

आईये विश्वकर्मा समाज को
बेहतर से बेहतरीन बनाएं

विश्वकर्मा समाज डॉट कॉम से
जुड़ने के लिए आज ही रजिस्टर करें

www.VishwakarmaSamaj.com

विश्वकर्मा समाज
a generation awareness

अनिल विश्वकर्मा (फाउंडर)
09869866137

सभी विश्वकर्मा वंशियों को हार्दिक शुभकामनाएं

R.N.I. No.- UPHIN/2000/01157
विश्वकर्मा किरण
हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका

वर्ष-20 अंक-28
जौनपुर, 28 जुलाई, 2019
पृष्ठः 32 मूल्यः 25/- रूपया

प्रेरक
रघबीर सिंह जांगड़ा
मो0: 9416332222
*****
सम्पादक
कमलेश प्रताप विश्वकर्मा
मो0: 9454619328
*****
सह सम्पादक
विजय कुमार विश्वकर्मा
मो0: 8763834009
*****
सह सम्पादक
धीरज विश्वकर्मा
मो0: 9795164872
*****
समन्वय सम्पादक
शिवलाल सुथार
मो0: 8424846141
*****
मुम्बई ब्यूरो
इन्द्रकुमार विश्वकर्मा
मो0: 9892932429
*****
जौनपुर ब्यूरो
संजय विश्वकर्मा
मो0: 9415273179

-:सम्पर्क एवं प्रसार कार्यालयः-
डिजिटल प्वाइंट, कैपिटल बिल्डिंग
(भाजपा कार्यालय के सामने)
त्रिलोकनाथ रोड, हजरतगंज
लखनऊ। 226001

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक कमलेश प्रताप विश्वकर्मा द्वारा अजन्ता प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, अहमद काम्प्लेक्स, गुईन रोड, अमीनाबाद, लखनऊ से मुद्रित एवं 98, नारायण निवास, नखास, सदर, जौनपुर से प्रकाशित।
सम्पादक- कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

website: www.vishwakarmakiran.com
E-mail: news@vishwakarmakiran.com

-:मुख्य संरक्षकः-
विश्वकर्मा जागरूकता मिशन

कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

सम्पादकीय...

कर्मयोगी वीतराग स्वामी कल्याणदेव

स्वामी कल्याणदेव महराज

भारत भूति संतों, ऋषियों, मुनियों की तपोस्थली रही है। यहां एक से बढ़कर एक संत हुये और सभी ने अपनी अलग पहचान बनाई। इसी भूमि पर स्वामी कल्याणदेव महराज भी जन्म लिये जिनकी पहचान अद्भुत व अनोखी है। संत होना और मानव कल्याण के लिये संतत्व का पालन करना दोनों में काफी अन्तर है। स्वामी कल्याणदेव महराज ने जीवन पर्यन्त समाज की भलाई के लिये कार्य किया।

स्वामी कल्याणदेव महराज के उम्रकाल में भी कई संत पैदा हुये। इनमें से ज्यादातर ने अंधविश्वास को ही बढ़ावा दिया। यहां तक कि कई संत खुद को भगवान के रूप में भी प्रतिष्ठापित होने का पूरा प्रयास किया। एक संत ऐसे भी हुये जिन्होंने अपने आसन से एक फीट ऊपर उठकर खुद को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया था। हालाकि वह संत अब दुनिया में नहीं हैं पर इतना जरूर कहना चाहूंगा कि उनके आसन से एक फीट ऊपर उठने के चैलेंज को जादूगर ओ0पी0 शर्मा ने अंधविश्वास करार देते हुये आसन से साढ़े तीन फीट ऊपर उठने का शानदार प्रदर्शन किया है, जादूगर ने इसे अपनी कला बताते हुये अंधविश्वास से दूर रहने को भी कहा है।

वीतराग स्वामी कल्याणदेव महराज के बारे में बताना है कि वह अन्य संतो से अलग मानव कल्याण के लिये अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने अपने जीवनकाल में हमेशा जरूरतमंदो की मदद करने का संदेश दिया। वह कहा करते थे कि अपनी जरूरत कम करो और जरूरतमंदो की हरसंभव मदद करो। परोपकार को ही वह सबसे बड़ा धर्म मानते थे, ऐसा उन्होंने जीवन पर्यन्त किया भी। सदैव पानी में भिगोकर भिक्षा में ली गई रोटी खाने वाले स्वामी जी ने 129 वर्ष की आयु में 300 से अधिक शिक्षा केन्द्र स्थापित कर रिकार्ड स्थापित किया। इसीलिये उन्हें शिक्षा ऋषि कहा गया। यही वजह है कि अन्य संतों और स्वामी कल्याणदेव में जमीन-आसमान का अन्तर है। स्वामी कल्याणदेव महराज तीन पीढ़ी के दृष्टा रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन के 100 साल समाजसेवा को ही दिया। ऐसी महान विभूति को शत-शत नमन।

विश्वकर्मावंशीय महान शिक्षा ऋषि स्वामी कल्याणदेव महराज के नाम पर

मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ ने किया कल्याणदेव भागवत भवन का शिलान्यास

मुजफ्फरनगर (ब्यूरो)। विश्वकमार्वंशीय शिक्षाऋषि वीतराग स्वामी कल्याणदेव महराज द्वारा स्थापित शुकतीर्थ आश्रम के विकास के लिये उत्तर प्रदेश सरकार 20 करोड़ रुपए खर्च करने जा रही है। स्वामी जी के 15वीं पुण्यतिथि के अवसर पर शुकतीर्थ आश्रम पहुंचे उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ ने यह घोषणा की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वीतराग संत स्वामी कल्याण देव की समाधि स्थल और मंदिर में शीश झुकाकर श्रद्धा सुमन अर्पित की। उन्होंने शुकतीर्थ में पर्यटन से जुड़ी योजनाओं का शिलान्यास किया

आधुनिक भागवत कथा भवन के मॉडल का लोकार्पण किया व स्वामी ओमानंद के सानिध्य में शुकदेव गोशाला के विस्तारीकरण का लोकार्पण व अवलोकन किया।

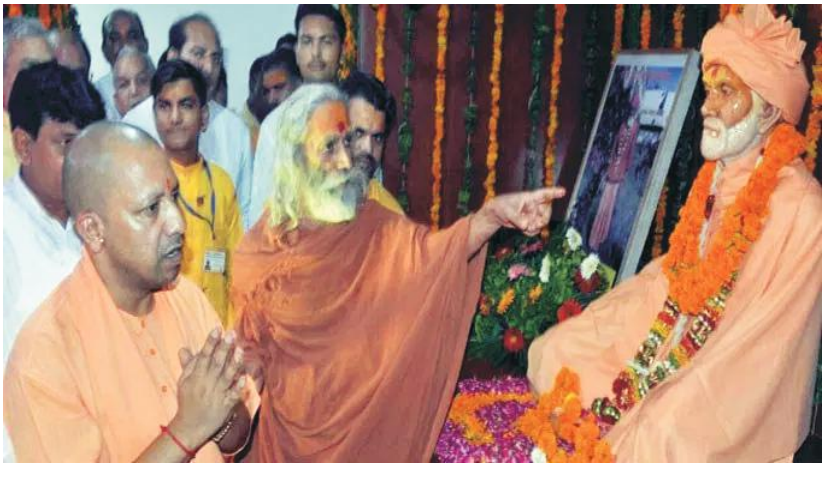

और एक वर्ष में सभी कार्य पूर्ण करने का भरोसा दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि शुकतीर्थ का काशी, अयोध्या और मथुरा की तरह विकास किया जाएगा।

इस दौरान मुख्यमन्त्री ने मुख्यमंत्री योगी ने अपने 36 मिनट के भाषण में धर्म, समाज और संस्कृति पर खूब बाते कही हैं। उन्होंने कहा कि भारत सन्तों की भूमि है। सन्तों का जीवन ही मानव कल्याण के होता है। श्री मद भागवत कथा का पांच हजार वर्ष पुराना शुकतीर्थ से नाता है। सन्तों की उपासना विधि अलग-अलग हो सकती है, लेकिन उनका उद्देश्य मानव कल्याण ही है। यह भारत की धरती है कि गुरुओं को पूजा जाता है और उनकी स्मृति में गुरु पूर्णिमा जैसा पर्व मनाया जाता है।

बता दें कि स्वामी कल्याणदेव महराज ने शिक्षण संस्थानों की लम्बी श्रृंखला खड़ी की है। उनके त्याग और समाज सेवा को लोग जीवन पर्यन्त याद रखेंगे। स्वामी कल्याणदेव महराज के शिष्य ओमानन्द महराज ने शुकतीर्थ से सम्बन्धित स्वामी जी की कल्पनाओं सहित कई मांगे मुख्यमन्त्री के समक्ष रखी। ओमानन्द महराज ने कहा कि मांगो को पूरा कराने के लिये वह मुख्यमन्त्री से मिलकर याद दिलाते रहेंगे। इस अवसर पर कई सांसद, विधायक, भाजपा नेता व विश्वकर्मा समाज के नेतागण उपस्थित रहे।

विश्वकर्मावंश के गौरव महान शिक्षा ऋषि थे ब्रह्मलीन स्वामी कल्याणदेव

निष्काम, कर्मयोगी, तप, त्याग और सेवा की साक्षात मूर्ति ब्रह्मलीन स्वामी कल्याणदेव महराज का जन्म वर्ष 1876 में जिला बागपत के गांव कोताना में उनकी ननिहाल में हुआ था। उनका पालन पोषण मुजफ्फरनगर के अपने गांव मुंडभर में हुआ था। उन्होंने वर्ष 1900 में मुनि की रेती ऋषिकेश में गुरूदेव स्वामी पूर्णानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ली थी। अपने 129 वर्ष के जीवनकाल में उन्होनें 100 वर्ष जनसेवा में गुजारे। स्वामी जी ने करीब 300 शिक्षण संस्थाओं के साथ कृषि केन्द्रों, गऊशालाओं, वृद्ध आश्रमों, चिकित्सालयों आदि का निर्माण कराकर समाजसेवा में अपनी उत्कृष्ट छाप छोड़ी।

ब्रह्मलीन स्वामी कल्याणदेव जी के प्रमुख शिष्य एवं उत्तराधिकारी ओमानन्द जी के अनुसार स्वामी कल्याणदेव जी को उनके सामाजिक कार्यों के लिये तत्कालीन राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने 20 मार्च 1982 में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया। इसके बाद 17 अगस्त 1994 को गुलजारी लाल नन्दा फाउंडेशन की ओर से तत्कालीन राष्ट्रपति डा0 शंकर दयाल शर्मा ने उन्हें नैतिक पुरूस्कार से सम्मानित किया। 30 मार्च 2000 को तत्कालीन राष्ट्रपति के0आर0 नरायणन द्वारा 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया। इसके बाद चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के दीक्षांत समारोह में उन्हें 23 जून 2002 को तत्कालीन राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री ने साहित्य वारिधि डी-लिट उपाधि प्रदान की थी।

स्वामी ओमानन्द के अनुसार ब्रह्मलीन स्वामी कल्याणदेव जी महाराज अपने जीवनकाल में कभी भी रिक्शा में नहीं बैठे। लखनऊ, दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर जाकर भी वे हमेशा पैदल चला करते थे। उनका तर्क था कि रिक्शा में आदमी, आदमी को खींचता है जो कि पाप है। पांच घरों से रोटी की भिक्षा लेकर एक रोटी गाय को दूसरी रोटी कुत्ते को तीसरी रोटी पक्षियों के लिये छत पर डालते थे। बची दो रोटियां को वह पानी में भिगोकर खाते थे।

ब्रह्मलीन स्वामी कल्याण देव जी महाराज ने ब्रह्मलीन होने के एक वर्ष पहले ही अपने शिष्य स्वामी ओमानंद महाराज को अपनी समाधि का स्थान बता दिया था। यहॉ तक की मृत्यु के तीन दिन पहले स्वामी जी ने अंतिम सांस लेने से दस मिनट पहले शुक्रताल स्थित मंदिर व वटवृक्ष की परिक्रमा की इच्छा जताई थी। उनकी इच्छानुसार उनके अनुयायियों ने ऐसा ही किया। इस दौरान भगवान श्रीकृष्ण का चित्र देखकर उनके चेहरे पर हंसी आ गई।

ब्रह्मलीन स्वामी कल्याण देव महाराज जी ने अपने जीवनकाल में हमेशा जरूरतमंदो की मदद करने का संदेश दिया। वह कहा करते थे कि अपनी जरूरत कम करो और जरूरतमंदो की

ब्रह्मलीन स्वामी कल्याण देव महराज के साथ तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटल विहारी वाजपेयी

ब्रह्मलीन स्वामी कल्याण देव महाराज जी ने अपने जीवनकाल में हमेशा जरूरतमंदो की मदद करने का संदेश दिया। वह कहा करते थे कि अपनी जरूरत कम करो और जरूरतमंदो की हरसंभव मदद करो। परोपकार को ही वह सबसे बड़ा धर्म मानते थे, ऐसा उन्होंने जीवन पर्यन्त किया भी।

हरसंभव मदद करो। परोपकार को ही वह सबसे बड़ा धर्म मानते थे, ऐसा उन्होंने जीवन पर्यन्त किया भी। सदैव पानी में भिगोकर भिक्षा में ली गई रोटी खाने वाले स्वामी जी ने 129 वर्ष की आयु में 300 से अधिक शिक्षा केन्द्र स्थापित कर रिकार्ड स्थापित किया।

ऐतिहासिक श्रीमद्भागवत की उद्गम स्थली शुकतीर्थ के विकास को वीतराग स्वामी कल्याणदेव ने जीवन पर्यंत तप, त्याग और सेवा की। तीन सदी के द्दष्टा, 129 वर्षीय ब्रह्मलीन स्वामी कल्याणदेव का जीवन विराट, विलक्षण पुरुषार्थ का प्रतीक था। समाज उत्थान के कार्यों की अमिट सेवा कर महान संत देश में ध्रुव स्थान पा गए। उनके कृतित्व की कहानियां समाज और राष्ट्र को प्रेरणा देती है। वर्ष 1944 में प्रयाग कुम्भ में संत महात्माओं की मौजूदगी में संगम तट पर गंगाजल हाथ में लेकर स्वामी कल्याणदेव ने शुकतीर्थ के जीर्णोद्धार का संकल्प लिया। पंडित मदन मोहन मालवीय ने चार सितम्बर 1945 को शिक्षा ऋषि को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एक पत्र लिखा, जिसमें शुकदेव आश्रम में श्रीदभागवत के विद्वान वैदिकों से यज्ञ और उपदेश कराने की सलाह दी। स्वामी कृष्ण बोधाश्रम महाराज, स्वामी करपात्री, गोकुलनाथ वल्लभाचार्य, रामानुजाचार्य आदि देश के संतों के मार्गदर्शन में वीरराग संत ने शुकतीर्थ को विकसित किया। पांडवों के वंशज महाराजा परीक्षित को व्यासनंदन श्री शुकदेव मुनि ने मोक्षदायिनी भागवत कथा सुनाई थी। 14 जुलाई 2004 को पावन वटवृक्ष और शुकदेव मंदिर की परिक्रमा कर दिव्य संत ब्रह्मलीन हो गए।

मां सरस्वती के भक्त तथा मुजफ्फरनगर के इस महान विश्वकर्मावंशीय शिक्षा ऋषि को शत–शत नमन।

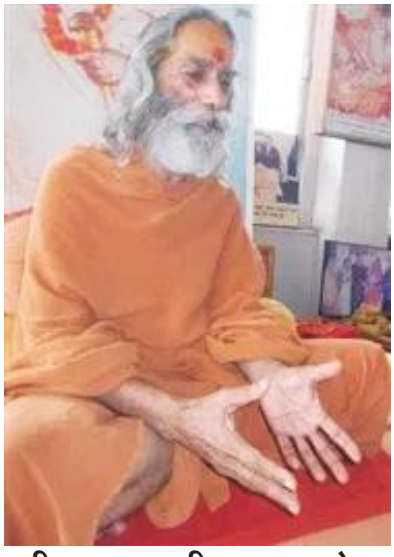

बीतराग स्वामी कल्याण देव महाराज के शिष्य स्वामी ओमानन्द महराज

स्वामी कल्याणदेव महराज के ब्रह्मलीन होने के बाद से ही उनके उत्तराधिकारी के रूप में स्वामी ओमानन्द महराज ही शुकतीर्थ स्थित शुकदेव आश्रम की पूरी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। स्वामी ओमानन्द महराज, स्वामी कल्याणदेव महराज के संकल्पों को पूरा करने के लिये सदैव अग्रसर हैं। वह शुकतीर्थ के विकास के लिये मन्त्रियों और अधिकारियों का भी चक्कर काटते रहे हैं। उन्होंने नरेन्द्र मोदी-1 सरकार में केन्द्रीय गृहमन्त्री रहे राजनाथ सिंह के साथ ही सपा सरकार में मुख्यमन्त्री रहे अखिलेश यादव से भी मुलाकात की थी।

स्वामी ओमानन्द महराज शुकतीर्थ के विकास के लिये कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते। उन्होंने अपनी तरफ से बड़ा प्लान तैयार किया है। वह चाहते हैं कि सरकार उनके प्लान के अनुसार शुकतीर्थ का विकास करे। स्थानीय लोगों के अनुसार गंगा जी का तट भी शुकतीर्थ तक बढ़ाने की योजना है जिसके लिये पूरा प्रयास किया जा रहा है।

नितेश कुमार जांगिड़ ने बनाई दुनिया की पहली 'कंटीन्यूअस पॉजिटिव एयरवे' डिवाइस लंदन में मिला अवार्ड

बेंगलुरु। इंजीनियर नितेश कुमार जांगिड़ ने दुनिया की पहली ऐसी डिवाइस कंटीन्यूअस पॉजिटिव एयरवे प्रेशर (CPAP) बनाई है जो बिजली के तमाम श्रोतों से चलती है। इनके डिवाइस की चर्चा लंदन सहित दुनिया में हो रही है।

डिवाइस को एक रिचार्जेबल बैटरी, compressed gas और यहां तक कि मैनुअल एयर पंपिंग से चलाया जा सकता है। ये कम लागत की है इसलिए गरीबों की भी मददगार साबित हो रही है। इस डिवाइस ने भारत के छोटे शहरों में कई नवजात शिशुओं की जान बचाई है। डिवाइस बनाने वाले नितेश को लंदन में 2019 Commonwealth Secretary-General's Innovation for Sustainable Development Award दिया गया है।

ब्रीदिंग सपोर्ट डिवाइस की तत्काल पहुंच की कमी के कारण श्वसन संकट सिंड्रोम से नवजातों क्टो मौतों से बचाने के लिए सांस डिवाइस का निर्माण किया। इसके लिए उन्हें कॉमनवेल्थ का यह सम्मान दिया गया।

बीते माह लंदन में आयोजित समारोह में प्रिंस हैरी ने उन्हें 'यूथ एंबेसडर' के रूप में पुरस्कार दिया। उन्होंने इस मौके पर कहा कि हमारा मिशन है कि मैं यह सुनिश्चित कर सकूं कि कोई भी बच्चा टेक्नोलॉजी की छोटी सी भी कमी से न मरे।

नितेश ने बताया कि भारत जैसे देशों में, सार्वजनिक अस्पतालों में अनियमित बिजली की आपूर्ति और सीमित संसाधनों में भी इस डिवाइस का इस्तेमाल किया जा सकता है। इतना ही नहीं कोई भी, कहीं भी इस उपकरण का उपयोग कर सकता है और समय से पहले बच्चों को जरूरी सहायता प्रदान कर सकता है।

तीन माह से सरकारी स्कूलों में हो रही प्रयोग–

मूल रूप से बेंगलुरु के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर नितेश कुमार जांगिड़ एक मेडिकल डिवाइस कंपनी के Coeo Labs के को-फाउण्डर हैं। उनकी तैयार की गई डिवाइस पिछले कई महीनों से भारत के विभिन्न जिला अस्पतालों में है।

चंद्रयान-2 की सफलता में भागलपुर के अमरदीप विश्वकर्मा का भी रहा अहम योगदान

भागलपुर। चंद्रयान-2 की सफलता में बिहार के लाल अमरदीप विश्वकर्मा का भी कमाल रहा है। इसरो के वरीय वैज्ञानिक अमरदीप कुमार का सम्बंध बिहार के भागलपुर और झारखंड के देवघर से है। भारत के लिए 22 जुलाई 2019 का दिन बेहद खास रहा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने चंद्रयान-2 को लॉन्च कर इतिहास रच दिया है। चंद्रयान-2 को लेकर 'बाहुबली' रॉकेट दोपहर 2.43 मिनट पर सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से रवाना हुआ। इस रॉकेट के निर्माण में बिहार के लाल अमरदीप कुमार का अहम योगदान रहा।

इसरो के महत्वाकांक्षी मिशन चंद्रयान-2 को लेकर 'बाहुबली' रॉकेट दोपहर दो बजकर 43 मिनट पर श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से उड़ान भरा। इसके साथ ही भारत अंतरिक्ष की दुनिया में उपलब्धियों की एक और कदम आगे बढ़ गया।

देश के इस बढ़ते कदम में भागलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज के पूर्ववर्ती छात्र सह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) के वरीय वैज्ञानिक अमरदीप कुमार की सहभागिता भी काम आई। अमरदीप देवघर जिला के मूल निवासी हैं। इस उपलब्धि पर उनके पिता दिनेश्वर विश्वकर्मा और माता चिंता देवी सहित परिजनों में खुशी की लहर है।

प्रोजेक्ट ग्रुप में अमरदीप रहे हैं वैज्ञानिक–

603 करोड़ की लागत से 3.8 टन वजनी बने चंद्रयान-2 को अंतरिक्ष में ले जाने वाले इसरो के सबसे भारी रॉकेट जियोसिंक्रोनस सेटेलाइट लांच व्हीकल मार्क-3 (जीएसएलवी एमके-3) के पहले चरण के प्रोजेक्ट ग्रुप में वैज्ञानिक अमरदीप ने भी अपनी अहम भूमिका निभाई है। इसरो में 12 साल काम कर चुके अमरदीप ने बताया कि मैंने पहले चरण में एल110 में काम करते हुए अपने प्रोजेक्ट डायरेक्टर को रिपोर्ट करता था, जो त्रिवेंद्रम में है। जिसमें 110 टन ईंधन भरा होता है। जो धरती के गुरुत्वाकर्षण बल का सामना करता है। इसकी ऊंचाई 21 मीटर, परिधि चार मीटर और इंजन 2गुने विकास होता है। इसमें यूडीएमएच प्लस एन204 का 110 टन ईंधन भरा होता है। जो जीएसएलवी एमके 3 के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण पार्ट है। उन्होंने कहा कि जीएसएलवी-एमके 3 इसरो का

सबसे भारी भरकम रॉकेट है। इसका वजन 640 टन है।जिसकी लागत 375 करोड़ है।

मानव मिशन यान में काम करने की तमन्ना–

एक सवाल के जवाब में वैज्ञानिक अमरदीप ने कहा कि बहरहाल दो वर्ष तक इण्डियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस में अध्ययन कर रहा हूं, अगस्त में पूरा हो जाएगा। आगे हमारी योजना गगनयान में काम करने की है।जो भारत का पहला मानव मिशन यान होगा।इस यान में भी उक्त रॉकेट का ही उपयोग किया जाएगा।

चौथा देश बना भारत–

चंद्रयान-2 को चंद्रमा पर उतारने वाला भारत विश्व का चौथा देश बन गया। इसके पूर्व यान को चांद पर उतारने वाले देशों के श्रेणी में अमेरिका, चीन और रूस शामिल हैं। बता दें कि इसके पूर्व भारत ने चंद्रयान-1 भेजा था। जो लगातार 10 माह तक चांद की परिक्रमा करने के बाद पानी की खोज में सफलता पाई थी।

चंद्रयान-2 का हिस्सा बन खुश हूं, अब गगनयान में काम करने की तमन्ना–

भागलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज से 1997 में मैकेनिकल इंजीनियरिंग ब्रांच से पासआउट व इसरो के वरीय वैज्ञानिक अमरदीप भी चंद्रयान-2 का हिस्सा हैं। इसके सफल प्रक्षेपण के बाद उन्होंने कहा कि इतने बड़े मिशन का हिस्सा बनकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। अब गगनयान में काम करने की तमन्ना है।

चंद्रयान-2 की सफलता पर इतराया इंजीनियरिंग कॉलेज–

चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण से भागलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज में खुशी का माहौल है। यहां के छात्रों का कहना है कि इस यान की सफलता में उनके संस्थान की भी सहभागिता है। 1997 में मैकेनिकल इंजीनियरिंग ब्रांच से पासआउट छात्र अमरदीप कुमार ने भी इसरो के वरीय वैज्ञानिक होने के नाते चंद्रयान-2 के जीएसएलवी एमके-3 रॉकेट के पहले चरण में अहम भूमिका निभाई है।

माता-पिता सहित परिजन और मित्र खुश–

इधर, खुशी का इजहार करते हुए वैज्ञानिक अमरदीप के पिता देवघर निवासी दिनेश्वर विश्वकर्मा एवं माता चिंदा देवी ने कहा बेटे की मेहनत देश को काम आई। इससे बड़ी खुशी और कुछ नहीं हो सकती है।उसने विश्व में देश का नाम रोशन किया है। एक दैनिक समाचार पत्र के संवाददाता से बातचीत में अमरदीप कुमार विश्वकर्मा ने कहा कि चंद्रयान-2 की सफलता पर वह गर्व महसूस कर रहे हैं। अब हमारा देश चांद पर उतरने वाला विश्व का चौथा देश बन गया।

मिशन से ये होंगे फायदे–

चंद्रयान-2 से चांद पर बर्फ की खोज में सफलता मिली तो भविष्य में इसे इंसानों के रहने लायक बनाया जा सकेगा। इसके साथ ही अंतरिक्ष विज्ञान में भी नई खोजों का रास्ता खुलेगा। प्रक्षेपण के 53 से 54 दिन बाद चांद के दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान- 2 की लैंडिंग होगी। अगले 14 दिन तक यह डाटा जुटाएगा। पृथ्वी से नजदीक होने के कारण यहां टेक्नोलॉजी परीक्षण का भी केंद्र बनाया जा सकेगा।

(साभार)

प्रो0 विभाष चंद्र झा टीएमबीयू के कुलपति नियुक्त

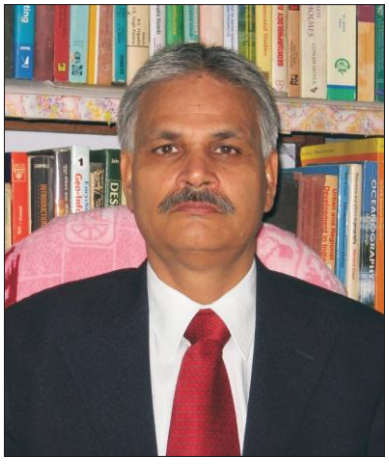

भागलपुर।बिहार के राज्यपाल लाल जी टंडन ने तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय (टीएमबीयू) के कुलपति पद पर प्रो0 विभाष चंद्र झा को नियुक्त किया है। राज्यपाल ने बिहार राज्य विवि अधिनियम-1976 के तहत अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए सर्च कमेटी की अनुशंसा पर प्रो0 झा को तीन साल के लिए कुलपति पद पर बहाल किया है।इसकी अधिसूचना कुलाधिपति कार्यालय ने जारी कर दी। हालांकि राज्यपाल का तबादला मध्य प्रदेश हो चुका है। ऐसे में उनके द्वारा की गयी इस नियुक्ति को लेकर कई तरह की चचाएं भी होने लगी हैं।

शान्ति निकेतन विवि में लम्बे समय तक सेवा दे चुके प्रो0 विभाष चन्द्र झा तिलकामांझी विश्वविद्यालय के नये कुलपति के रूप में पदभार ग्रहण करेंगे। उन्होंने इस विवि के शैक्षणिक कैलेण्डर को दुरूस्त करने व परीक्षाएं समय पर आयोजित करने को प्राथमिकता देने की बात कही है।

सत्यनारायण शर्मा, खरीक, भागलपुर।

ए0आर0 रहमान के लिये पार्श्वगायन करना चाहती हैं इशिता विश्वकर्मा

पटना। सिंगिंग रियेलिटी शो 'सारेगामापा 2018' की विजेता इशिता विश्वकर्मा बॉलीवुड के दिग्गज संगीतकार और ऑस्कर विजेता ए0आर0 रहमान के लिये पार्श्वगायन करना चाहती हैं।

इशिता विश्वकर्मा सामूहिक विवाह कार्यक्रम 'एक विवाह ऐसा भी' में शिरकत करने के लिये राजधानी पटना पहुंची थी। उन्होंने बताया कि वह बॉलीवुड में बतौर पार्श्वगायिका अपनी पहचान बनाना चाहती है। यदि उन्हें अवसर मिलता है तो वह महान संगीतकार ए0आर0 रहमान के लिये पार्श्वगायन करना चाहती है। उन्होंने कहा, 'मेरा ड्रीम है कि मुझे कभी भी रहमान जी के साथ काम करने का मौका मिल जाए। मुझे उनकी फिल्म में गाना है, मैं इसके लिए खुद भी बहुत मेहनत करूंगी।'

लता मंगेश्कर और श्रेया घोषाल को आदर्श माने वाली जबलपुर की इशिता ने बताया कि उन्हें संगीत की शिक्षा विरासत में मिली है। उनकी मां तेजल विश्वकर्मा भी पार्श्व गायिका हैं जबकि उनके पिता पापा अंजनी कुमार साउंड रिकॉर्डिस्ट हैं। उन्होंने कहा, 'मेरे मम्मी-पापा दोनों संगीत के क्षेत्र में हैं। उन्होंने मुझे काफी सपोर्ट दिया है।'

इशिता ने बताया कि वह जब ढ़ाई साल की थी तभी से उनकी रूचि संगीत की ओर हो गयी। चार साल की उम्र से उन्होंने श्री प्रकाश वेरुलकर से संगीत की शिक्षा लेनी शुरू कर दी। इशिता ने बताया, 'वह पांच साल पूर्व सारेगामापा लिटिल चैंप में हिस्सा लिया था लेकिन टॉप-12 से बाहर हो गई। मुझे इस से बहुत दुख पहुंचा। मैंने इरादा कर लिया कि मैं दोबारा लौटकर जरूर आऊंगी और जीतकर जाऊंगी। मैं इतनी मेहनत कर जाऊंगी कि सच में मुझे विनिंग ट्रॉफी मिल जाएगी। इसके बाद मुझे सचिन पिलगांवकर की एक फिल्म में पार्श्वगायन करने का अवसर मिला। मैंने कई सिंगिंग रियलिटी शो में हिस्सा लिया और आखिरकार सारेगामापा में जाकर सफलता मिली।'

इशिता ने बताया, 'यदि आप किसी प्रतियोगिता में हार जाते हैं तो आपको हिम्मत नही हारनी चाहिये। कभी भी आपको कॉन्फिडेंस कम नही करना चाहिये। हारे हुये प्रतिभागियों को दुखी होने की जरूरत नहीं है। यह सब चीजें किस्मत का खेल होती है। भगवान पर भरोसा रखो, वह बहुत बड़ी चीज होती है। उसी के कारण इतनी सारी सफलता मिलती है।जीतने पर फेम को कभी सिर पर भी नहीं चढ़नें देना चाहिए।'

सारेगामापा की विजेता ने बताया, 'मुझे अभी बहुत दूर तक जाना है और सक्सेसफुल प्लेबैक सिंगर बनना है। अमाल मालिक जी हमारे शो जज करने के लिए आए थे। उन्होंने मुझे गाने का चांस दिया है, हम उनके संपर्क में हैं। मैं उनके लिए किसी फिल्म या सिंगल में गाऊंगी। मुझे लगता है मैं मेहनत करूंगी तो सफल हो जाऊंगी।' उन्होंने फिल्म में अभिनय करने के सवाल के जवाब में कहा, 'मुझे ऐक्टिंग में कोई खास दिलचस्पी फिलहाल नहीं है लेकिन मौका मिलेगा तो मैं ऐक्टिंग भी करूंगी। यंग जनरेशन के कई ऐक्टर गाना भी गाते हैं। जब वह लोग गाना गए सकते हैं तो हम भी ऐक्टिंग कर सकते हैं। चांस मिलेगा तो मैं जरूर ऐक्टिंग करूंगी।'

(साभार– भोजपुरी मीडिया)

बाड़मेर की पार्वती जांगिड़ को अन्तर्राष्ट्रीय पदक

पार्वती जांगिड़ दिल्ली में राष्ट्र निर्माण, राष्ट्रवाद, लीडरशिप, पब्लिक पॉलिसी इत्यादि के बारे में सीख रही हैं।

बाड़मेर। यूरोपीय देश, रिपब्लिक ऑफ मोल्दोवा के जिओग्राफी सैन्य संस्थान ने बाड़मेर की गौरव और सामाजिक कार्यकर्ता, यूथ आइकॉन व युवा संसद, भारत की चेयरपर्सन पार्वती जांगिड़ सुथार के नाम 'दी नाइट ऑफ इंटरनेशनल इल्लुमिनेशन एंड आर्डर ऑफ लीडरशिप एंड दी गर्ल हीरो' अवार्ड प्रदान किया है। सुश्री जांगिड़ मूल भारत पाक सीमा पर बसे गागरिया गाँव के श्रीमती संजू सुथार एवं स्वर्गीय लूणाराम सुथार की बेटी है, अभी जांगिड़ का विजन इंडिया लीडरशिप फेलोशिप में चयन हुआ है, जिसके तहत वह दिल्ली में फेलोशिप कर रही हैं।

यह सूचना जिओग्राफी सैन्य संस्थान, मोल्दोवा के चीफ लेफ्टिनेन्ट कर्नल निकोले पारसेवची ने सुश्री जांगिड़ व रोमानिया, मोल्दोवा में भारतीय दूतावास को बधाई पत्र देते हुए दी। उन्होंने कहा एक्सीलेंसी पार्वती जांगिड़ के उत्कृष्ट कार्यों को देखते हुए यह सम्मान दिया। साथ ही कहा कि दस वर्ष तक यूथ पार्लियामेंट भारत व जिओग्राफी सैन्य संस्थान के बीच एमओयू किया, जिससे एक दूसरे देश की मित्रता, सांस्कृतिक आदान–प्रदान व युवाओं को राष्ट्र के प्रति जागरूकता मुख्य है। सुश्री जांगिड़ को यह सम्मान देते हुए हम गर्व महसूस करते हैं, और उन्होंने डिप्लोमेटिक चैनल द्वारा इस सूचना को भारतीय विदेश मंत्रालय, पीआईबी को दी।

इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिलने पर सुश्री जांगिड़ ने रिपब्लिक ऑफ मोल्दोवा का आभार प्रकट करते हुए दोनों देशों के बीच युवा विकास व सांस्कृतिक आदान–प्रदान पर अपनी प्रतिबद्धता जताई और यह सम्मान देश को समर्पित कर आजीवन राष्ट्र निर्माण के संकल्प को दोहराया। उन्होंने कहा मैं हमेशा राष्ट्र जागरण व समाजसेवा में कोई कसर नहीं छोड़ूंगी। इसी तरह निष्ठा से कर्मशील रहूंगी। और युवाओं को राष्ट्रवाद के प्रति प्रेरित करती रहूंगी।

ज्ञात हो कि हाल ही पार्वती की महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार में इंटर्नशिप समाप्त हुई और सुश्री जांगिड़ का विजन इंडिया लीडरशिप फेलोशिप में देश के टॉप पांच यंग लीडर में चयन हुआ, जिसके तहत वह दिल्ली में राष्ट्र निर्माण, राष्ट्रवाद, लीडरशिप, पब्लिक पॉलिसी इत्यादि के बारे में सीख रही हैं। एक साल चलने वाली इस फेलोशिप में जांगिड़ देश के अलग–अलग हिस्सों में जाकर राष्ट्र निर्माण के बारे में और अधिक सीखेंगी, इसके तहत इन्हे पांच लाख रुपये स्टाइपेंड भी मिलेगा।

DECISION No. 30
on the Award of the CGIM International Medal for 2019
Her Excellency PARVATI JANGID.

July 12, 2019. Mun.Chisinau, Republic of Moldova

According to the CGIM Statute, taking into consideration the special merits for the development of friendly relations with the Republic of Moldova, the Leadership of the Center of Moldavian Historical Geography in the Republic of Moldova decided:

To Award The International Medal of CGIM no. 35 "The Knight of International Distinction and order of Leadership & The Girl Hero Awards", to Her Excellency Ms. PARVATI JANGID, Chairperson and National President of Youth Parliament of India, and Global Goodwill Ambassador

NICOLAE PARCEVSCHII
President of CGIM RM
Lieutenant Colonel (R)

PARVATI JANGID,
Chairperson-Youth Parliament, 56,
gayatri Nagar, palroad,
JODHPUR-342014 INDIA

GREETING CARD

The Center for Historical Geography of the Republic of Moldova has the honor to award the International Medal of the Center to Her Excellency Ms. PARVATI JANGID, Chairperson and National President of the Youth Parliament of India, and Global Goodwill Ambassador.

We greatly appreciate the relations between Moldova and India. Congratulations to the soul and successes.

NICOLAE
PARCEVSCHII
President of CGIM RM
Lieutenant Colonel (R)

स्व०जगत भूषण विश्वकर्मा की 9वीं पुण्यतिथि मनाई गयी

शिव प्रकाश विश्वकर्मा

आजमगढ़। जगत इण्टर कालेज के संस्थापक स्व0 जगत भूषण विश्वकर्मा की 9वीं पुण्यतिथि मनाई गयी। जगत इण्टर कालेज गद्दोपुर में आयोजित पुण्यतिथि समारोह के अवसर पर विद्यालय की प्रतिभाओं का सम्मान भी किया गया। विद्यालय की इण्टमीडिएट की छात्रा रागिनी यादव ने यूपी बोर्ड परीक्षा में 6वां स्थान पाकर जगत इण्टर कालेज आजमगढ़ का नाम रोशन किया है उसका सम्मान किया गया। प्रतिभा सम्मान समारोह में विद्यालय की टाप टेन छात्राओं को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व उच्च शिक्षा राज्यमन्त्री रामआसरे विश्वकर्मा ने छात्राओं को प्रशस्ति पत्र और

मोमेन्टो देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर क्षेत्र के गरीब छात्राओं को पढ़ाने के लिये जगत छात्रवृत्ति योजना की स्थापना करने की घोषणा भी पूर्व मन्त्री ने किया। श्री विश्वकर्मा ने कहा कि मेरे पिताजी का सपना था कि ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को शिक्षा के लिये दूर नहीं जाना पड़े। उनको अच्छी और सस्ती शिक्षा गांव में ही मिले इसलिये उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में इण्टर कालेज बनाने का निर्णय लिया। यह विद्यालय आज जनपद का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय है जहां पर हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट की बोर्ड की परीक्षा में शत प्रतिशत बच्चे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते हैं।

श्री विश्वकर्मा ने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट बोर्ड 2019 की परीक्षा में प्रथम श्रेणी मे विशेष स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को प्रतिभा सम्मान समारोह में सम्मानित किया। सत्र 2019 में जगत इण्टर कालेज गद्दोपुर का परीक्षा परिणाम सर्वोत्तम रहा। हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा में जगत इण्टर कालेज में नीतू यादव 85.33%, संध्या मौर्या 85.16%, मोनी यादव 84.33%, प्रियांशी यादव 84.16%, साक्षी बौद्ध 84%, करीना 83.66%, अंजली 83.5%, शिवांगी यादव 83.16%, एकता गौतम 83%, रीशू यादव 82.83% छात्राओं ने उत्तीर्ण किया है। इसी प्रकार इण्टरमीडिएट की परीक्षा में रागिनी यादव 85.6% पाकर जनपद आजमगढ़ यू०पी० बोर्ड में 6वां स्थान हासिल किया है। सीमा 83.6%, रिया यादव 82.2%, काजल यादव 80.6%, शिल्पी सिंह 80%, गीतान्जली यादव 79.8%, दीपान्जलि 79%, दिव्या 78.6%, सायमाबानो 78%, गरिमा यादव 77.8% छात्राओं ने प्रथम स्थान में विशेष अंक प्राप्त किया हैं।

कार्यक्रम का संचालन प्रधानाचार्य हरीलाल आर्य ने किया तथा अध्यक्षता पूर्व प्रधानाचार्य रामाश्रय विश्वकर्मा ने किया। इस अवसर पर महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष राम अवतार विश्वकर्मा, युवा नेता लालू यादव, अमरनाथ विश्वकर्मा, चन्द्रभूषण विश्वकर्मा, सोचनराम विश्वकर्मा (जौनपुर), राजबहादुर विश्वकर्मा, अजीत विश्वकर्मा, राजेश कुमार यादव, अवनीश कुमार, खुशबू राव, सीमा मिश्रा, गरिमा सभी लोगो ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

पीड़ितों की आवाज बन रही श्री बजरंग सेना

सूरत के हितेश विश्वकर्मा ने किया है श्री बजरंग सेना का गठन

सूरत। श्री बजरंग सेना एक हिन्दूवादी संगठन है जिसका गठन सूरत निवासी हितेश विश्वकर्मा द्वारा किया गया है। यह संगठन हिन्दूवादी होने के साथ ही पीड़ितों और शोषितों की आवाज बन रहा है। संस्थापक हितेश विश्वकर्मा खुद एक जुझारू और समाज के प्रति समर्पित युवक हैं। मूलतः यू0पी0 के जौनपुर जनपद निवासी हितेश बचपन से ही सूरत शहर में रह रहे हैं। अपने कारोबार के साथ ही गरीबों और शोषित वर्ग के लोगों की लड़ाई वह बचपन से ही लड़ते आ रहे हैं। चाहे किसी का राशनकार्ड बनना हो या किसी के बच्चे का स्कूल में प्रवेश दिलाना हो, हितेश एक कदम आगे बढ़कर लोगों की सहायता करते रहे हैं।

हितेश, समाज सेवा के साथ ही शुरू से हिन्दूवादी संगठनों से जुड़े रहे हैं। उन्होंने कई संगठनों में काम किया। उत्पीड़ित लोगों की लड़ाई लड़ते हुये दबंगों द्वारा खुद उत्पीड़न झेला है और जेल भी गये हैं। अब उन्होंने खुद 'श्री बजरंग सेना' का गठन किया है। इस संगठन का कार्यक्षेत्र पूरा भारत है। हर प्रदेश में अध्यक्ष बनाये जा रहे हैं। प्रदेशों में जिला से लेकर ब्लाक स्तर तक सेना का गठन किया जा रहा है। उनका लक्ष्य हिन्दू धर्म को बचाये रखना और पीड़ित, शोषित, उपेक्षित लोगों की लड़ाई लड़ना है। इस संगठन के माध्यम से वह पूरे देश के गरीब और वंचित वर्ग के लोगों की लड़ाई लड़ेंगे।

''मैंने हिन्दू विश्वकर्मा परिवार में जन्म लिया है, हिन्दू धर्म, हिन्दुस्तान और हिन्दू समाज की रक्षा करना मेरा पहला कर्तव्य है। हमारा संगठन 'श्री बजरंग सेना' प्रत्येक उस लड़ाई में सम्मिलित रहेगा जो हिन्दू धर्म की रक्षा और सम्मान में लड़ी जायेगी। इसके साथ ही गरीबों, शोषितों और पीड़ितों की भी लड़ाई उनकी सेना के लक्ष्य में सम्मिलित है। वह और उनकी संस्था सदैव समाज के लिये समर्पित हैं।''

हितेश विश्वकर्मा
संस्थापक- श्री बजरंग सेना

मुस्लिम आक्रान्ताओं का सांस्कृतिक हनन और विश्वकर्मा वंशज

लेखक- अरविन्द विश्वकर्मा

अतीत के महान विचारों, किंवदंतियों से प्राप्त ज्ञान, सीख व अनुभव और श्रेष्ठ मानवीय पहलू के माध्यम से जीवन जीने की कला का आधार ही धर्म है। इस व्यवस्था को अनवरत आगे बढ़ाने की व्यवस्था को ही सांस्कृतिक धरोहर के रूप में जाना जाता है। भारतीय भूभाग के लोगों द्वारा मंदिरों को केंद्र बिन्दु मानकर आध्यात्मिक धरोहर के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक धरोहर को आगे बढ़ाया जा रहा था। इस भूभाग में 7वीं सदी के प्रारम्भ में उत्तर-पश्चिम की ओर से मुस्लिम आक्रांताओं का आक्रमण प्रारंभ हुआ। यहां उन्होंने सोना-चांदी आदि दौलत लूटने और मंदिरों को नष्ट करते हुए यहां की संस्कृति पर आक्रमण किया।

7वीं से लेकर 16वीं सदी तक लगातार हजारों हिन्दू, जैन और बौद्ध मंदिरों को तोड़ा और लूटा गया। उनमें से कुछ ऐसे थे, जो कि विशालतम होने के साथ ही भारतीय अस्मिता, पहचान और सम्मान से जुड़े थे। उनके नष्ट होते ही धार्मिक धुरी को आगे बढ़ाने वाले लोगों ने अपनी कर्मशील उद्यमिता को आगे बढ़ाकर जीविका के साधन को सर्वोपरि किया।

लगभग 1300 साल मुस्लिम आक्रांताओं के राज तथा अंग्रेजों की पराधीनता के समय जो धार्मिक क्षरण हुआ वह निरंतर जारी रहा और लुप्त हो गई उनकी पहचान जो इस क्षेत्र के धार्मिक पुरोधा थे, जिसको अन्य लोगों ने अपनाकर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। आज पुनः एक प्रकार का क्षरण हो रहा है वह है इनका उद्यमिता वाले काम धंधों से मोहभंग होना और अन्य वर्ग द्वारा इसे शौक से अपना लेना। वह समाज का स्थापित वर्ग जिसका सर्वाधिक नुकसान हुआ और कोई नहीं, बल्कि विश्वकर्मा वंशीय लोग थे।

दक्षिण भारत में उपरोक्त सांस्कृतिक क्षरण कम हुआ जिसको वर्तमान में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। दक्षिण में इस धर्म के अनुयाई पुरोहित व शंकराचार्य की बहुलता ही इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। जब 300 साल में महाराणा प्रताप के वंशज अपनी पहचान लगभग खो चुके हैं तो 1300 साल में विश्वकर्मा वंशीय लोगों का सांस्कृतिक हनन होने को आसानी से समझा जा सकता है। ऐसे सांस्कृतिक हनन को रोकने के लिए गोस्वामी तुलसीदास द्वारा अयोध्या के राजा राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में बतलाते हुए रामचरितमानस की रचना सनातन व्यवस्था के क्षरण को रोकते हुए नई दिशा देने में कारगर साबित हुई। किंतु यह प्रयास मूल सांस्कृतिक पुरोधा को उसकी मूल धारा में वापस लाने में सफल नहीं हुई।

वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में भारतीय सांस्कृतिक धरोहर पुनः उथल-पुथल के दौर से गुजर रही है। इस

आज पुनः एक प्रकार का क्षरण हो रहा है वह है इनका उद्यमिता वाले काम धंधों से मोहभंग होना और अन्य वर्ग द्वारा इसे शौक से अपना लेना। वह समाज का स्थापित वर्ग जिसका सर्वाधिक नुकसान हुआ और कोई नहीं, बल्कि विश्वकर्मा वंशीय लोग थे।

समय पूरा समाज तीन वर्गों में विभाजित होता हुआ स्पष्ट दिख रहा है। प्रथम वह वर्ग है जो आर्थिक रूप से बेहद संपन्न है, दूसरा मध्यम वर्ग और तीसरा गरीब वर्ग। विभिन्न धार्मिक व सांस्कृतिक मान्यताएं ऐसे उथल-पुथल को रोकने में सफल नहीं हो सकती, क्योंकि वर्तमान व्यवस्था संवैधानिक है जो अन्य सभी व्यवस्थाओं के पार है। धीरे-धीरे लोग इन्हीं तीन वर्गों में विभाजित होते जाएंगे और धार्मिक जकड़न कमजोर होती जाएगी। आइए हम सब मिलकर श्रेष्ठ भारत के निर्माण में उस शैक्षिक श्रेष्ठता की बुनियाद रखें जो आर्थिक असमानता की गति को कुछ कम कर सके।

हेमन्ती देवी ने विश्वकर्मा मन्दिर व धर्मशाला के लिये दान की दस डिसमिल जमीन

गिरीडीह। झारखण्ड प्रदेश विश्वकर्मा समाज जमुआ प्रखण्ड इकाई की बैठक जमुआ में आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रखण्ड अध्यक्ष बजरंगी लाल राणा व संचालन प्रखण्ड कोषाध्यक्ष बबलू राणा ने किया।

बैठक में अतिथि के रूप में प्रदेश मन्त्री दिनेश राणा, जिलाध्यक्ष विनोद राणा, महासचिव देवकी राणा, प्रवक्ता ज्योतिष शर्मा उपस्थित रहे। बैठक में उपस्थित बासुदेव विश्वकर्मा की पत्नी हेमन्ती देवी ने रेलवे स्टेशन जमुआ के नजदीक अपनी 10 डिसमिल जमीन विश्वकर्मा मन्दिर व धर्मशाला के लिये दान करने की घोषणा की।

बैठक में उपस्थित लोगों की मौजूदगी में ही उपरोक्त जमीन पर मन्दिर व धर्मशाला निर्माण के लिये विधिवत भूमि पूजन भी किया गया। जिलाध्यक्ष विनोद राणा ने कहा कि संगठन बासुदेव विश्वकर्मा व उनकी पत्नी हेमन्ती देवी का ऋणी रहेगा। यथाशीघ्र उक्त जमीन पर भव्य विश्वकर्मा मन्दिर व धर्मशाला का निर्माण कराया जायेगा।

रजि0 नं0: 2689

ॐ कंचन काया

Yoga Naturopathy & Acupressure Center

ॐ कंचनकाया चिकित्सा एवं प्रशिक्षण केन्द्र में प्राकृतिक चिकित्सा, योग चिकित्सा एवं एक्यूप्रेशर द्वारा शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों का समाधान तथा योग प्राकृतिक चिकित्सा एवं एक्यूप्रेशर द्वारा चिकित्सा का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

योग अभ्यास की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप अभ्यास की सुविधा :-

- ☞ व्यक्तिगत योगाभ्यास की सुविधा।
- ☞ आवास पर याोग प्रशिक्षण।
- ☞ केन्द्र पर योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा की सेवा।
- ☞ शारीरिक व्याधि जैसे मधुमेह, मोटापा, जोड़ों का दर्द, कब्ज, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, महिलाओं की मासिक धर्म से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान।

मानसिक व्याधि जैसे- अवसाद, अनिद्रा, अतिनिद्रा इत्यादि।

18/357, Indira Nagar
Lucknow
Mob.- 7355206306

डा0 पूनम शर्मा, प्राकृतिक चिकित्सक एवं योग विशेषज्ञ

कौन लड़ेगा विश्वकर्मा चौराहा की लड़ाई ?

लखनऊ। चारबाग के नजदीक एक चौराहा है बांसमण्डी। करीब दो दशक पहले विश्वकर्मा समाज के लोगों की मांग पर बांसमण्डी चौराहे का नाम 'विश्वकर्मा चौराहा' करने का प्रस्ताव नगर निगम लखनऊ ने पास कर दिया। नामकरण के बाद चौराहे के एक कोने पर 'विश्वकर्मा चौराहा' का पत्थर भी लगा दिया गया परन्तु लोग जान ही नहीं पाये कि यह 'विश्वकर्मा चौराहा' है। समय बीतता गया पर चौराहे का सुन्दरीकरण नहीं हुआ। पता नहीं कब 'विश्वकर्मा चौराहा' लिखा पत्थर वहां से हटा दिया गया। मायावती की सरकार में विधानसभा के सेवानिवृत्त विशेष सचिव डा0 सी0पी0 शर्मा के प्रयास से एक विधायक ने विधानसभा में 'विश्वकर्मा चौराहा' के अस्तित्व पर प्रश्न किया तो नगर निगम में खलबली मच गई। आनन-फानन में नगर निगम द्वारा पुनः पत्थर लगाया गया।

उसके बाद समाजवादी पार्टी की सरकार बनी और अखिलेश यादव मुख्यमन्त्री बने। चूंकि समाजवादी पार्टी में विश्वकर्मा समाज की मजबूत पकड़ थी सो उम्मीद थी कि 'विश्वकर्मा चौराहा' का सुन्दरीकरण हो जायेगा। परन्तु इस के विपरीत एक बार फिर उपरोक्त पत्थर ही गायब हो गया। 'विश्वकर्मा किरण' ने प्रमुखता से इस प्रकरण को उठाया परन्तु नतीजा शून्य रहा।

'विश्वकर्मा चौराहा' के सुन्दरीकरण की उम्मीद एक बार फिर जगी। सरकार तो सपा की ही थी परन्तु मेयर डा0 दिनेश शर्मा (वर्तमान उप मुख्यमन्त्री) थे। वर्ष 2016 में 17 सितम्बर विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर ककुहांस विश्वकर्मा मन्दिर में नगर निगम की तरफ से बनवाये गये द्वार का उद्घाटन करने पहुंचे। उन्होंने पूरे विश्वकर्मा समाज को आश्वस्त किया कि शीघ्र ही 'विश्वकर्मा चौराहा' का सुन्दरीकरण होगा और चौराहे पर छतरीयुक्त भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति भी स्थापित होगी। डा0 दिनेश शर्मा ने यही आश्वासन विराट विश्वकर्मा मन्दिर में भी पहुंचकर दी थी। उन्होंने अपने को विश्वकर्मा समाज के काफी नजदीक बताया था। समय बीता और डा0 दिनेश शर्मा इस प्रदेश के उप मुख्यमन्त्री बन गये परन्तु 'विश्वकर्मा चौराहा' का कोई पुरसाहाल नहीं।

अब सवाल यह कि 'विश्वकर्मा चौराहा' के अस्तित्व की लड़ाई कौन लड़ेगा? चौराहा के नजदीक ही दो विश्वकर्मा मन्दिर हैं और उनकी भारी-भरकम कमेटी भी है परन्तु किसी का भी ध्यान 'विश्वकर्मा चौराहा' के अस्तित्व पर नहीं है। काश! समाज के लोग इसके लिये अग्रसर हों।

सपा सरकार में ही समाप्त हुआ ''विश्वकर्मा चौराहा'' का अस्तित्व

कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

लखनऊ। विश्वकर्मा समाज की हितैषी कहलाने वाली सपा सरकार में ही "विश्वकर्मा चौराहा" का अस्तित्व समाप्त हो गया वह भी प्रदेश की राजधानी लखनऊ में सरकार की नाक के नीचे। ऐसा भी नहीं है कि चौराहा सरकारी कागज से गायब हुआ है, उसे तो सड़क, नाली और बाउण्ड्री बनाने वाले कर्मियों ने समाप्त कर दिया। कुछ लोगों ने इसके लिये नगर निगम और मुख्यमन्त्री को पत्र भी लिखा परन्तु कोई अमल नहीं हुआ।

बता दें कि उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में नगर निगम, लखनऊ द्वारा 13 जुलाई 1990 को एक प्रस्ताव पारित कर बांसमण्डी चौराहा का नामकरण "विश्वकर्मा चौराहा" कर तो दिया गया था पर उसका कोई अस्तित्व नहीं था। शायद लखनऊ के ही एक भी प्रतिशत लोग यह नहीं जानते रहे होंगे कि बांसमण्डी चौराहा का नाम "विश्वकर्मा चौराहा" है। इसी बीच विश्वकर्मा समाज के कुछ नेताओं ने नगर निगम से शिकायत की तो चौराहा के एक किनारे "विश्वकर्मा चौराहा" लिखा पत्थर लगा दिया गया। परन्तु न तो चौराहे का सुन्दरीकरण हुआ और न ही इसे किसी तरह प्रचारित किया गया।

(इस पेज पर लगी फोटो को गौर से देखिये जो खुद अपने स्थान का बयान कर रही है कि वह कहां है। यह फोटो करीब चार वर्ष पुरानी है क्योंकि इस समय वहां यह पत्थर भी नहीं है। विश्वकर्मा चौराहा लिखा जो पत्थर लगा था उसे कुछ लोगों ने तोड़ दिया था)

बांसमण्डी चौराहा पर यही पत्थर लगा था जो "विश्वकर्मा चौराहा" की निशानी थी, अब यह पत्थर वहां नहीं है।

यह भी बता दें कि पिछली बसपा सरकार में भी इस पत्थर को कुछ लोगों द्वारा तोड़ दिया गया था। उस दौरान स्व0 पवन पांचाल विश्वकर्मा (दिल्ली) के प्रयास से एक शुभचिन्तक विधायक मदन गोपाल उर्फ मदन भैया ने इस प्रकरण से सम्बन्धित एक सवाल विधानसभा में लगाया तो नगर निगम हरकत में आया और आनन-फानन में उसी टूटे हुये पत्थर को जोड़कर सही कर दिया। प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार बनने के बाद भी काफी दिन तक वह पत्थर उसी जगह पड़ा था लेकिन चौराहे पर लगे ट्रान्सफार्मर की बाउण्ड्री बनी तो उस पत्थर का नामो-निशान वहां से मिटा दिया गया। अब उस चौराहे पर "विश्वकर्मा चौराहा" की कोई पहचान नहीं है।

बसपा सरकार में इस पत्थर के बावत विधानसभा में प्रश्न किया तो नगर निगम लखनऊ ने आनन-फानन में यही पत्थर लगवा दिया था जो इस समय अपने स्थान पर नहीं है। अभी हाल ही में विश्वकर्मा समाज के कुछ लोगों ने नगर निगम के अधिकारियों से मिलकर इस पत्थर को पुनः लगवाने और चौराहा का सुन्दरीकरण कर इसका प्रचार करने की बात की तो अधिकारियों ने आनाकानी कर मामले को टाल दिया। कुछ लोगों ने मुख्यमन्त्री अखिलेश यादव को भी पत्र लिखा पर उसका कोई परिणाम नहीं निकला।

यह पत्थर क्यों नहीं लगा, चौराहे का सुन्दरीकरण क्यों नहीं हुआ, लोग आज तक क्यों नहीं जान सके कि बांसमण्डी चौराहा का नाम 'विश्वकर्मा चौराहा' है। इसकी जिम्मेदार तो सरकार है ही पर उससे ज्यादा जिम्मेदार हैं विश्वकर्मा समाज के संगठन और नेतागण। विश्वकर्मा समाज के नेता चाहे सत्तापक्ष के हों या विपक्ष के, उन्हें अपने राजनीतिक स्वार्थ के अलावा सामाजिक जिम्मेदारी का औचित्य समझ ही नहीं आ रहा है। पता नहीं क्यों नेतागण सामाजिक कार्यों से मुंह मोड़ रहे हैं।

विश्वकर्मा समाज ने बढ़ते अपराध और उत्पीड़न के खिलाफ बाइक रैली निकाल सरकार को चेताया

चन्दौली। ऑल इंडिया यूनाइटेड विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा जनपद चंदौली के तत्वाधान में विश्वकर्मा समाज के ऊपर हो रहे जुल्म, उत्पीड़न, अत्याचार, अन्याय के खिलाफ संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक कुमार विश्वकर्मा के नेतृत्व में एक विशाल बाइक जुलूस निकाला गया। जुलूस चंदौली नवीन मंडी से शुरू हुआ और मुख्यालय के विभिन्न मार्गों से होता हुआ जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर समाप्त हुआ। जुलूस में लोग अपराध और उत्पीड़न के खिलाफ शासन एवं प्रशासन विरोधी नारे लगा रहे थे। बाइक रैली से पूर्व सभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक कुमार विश्वकर्मा ने कहा कि आज वर्तमान

सरकार में शोषित, वंचित, गरीब और कामगार समाज के लोगों के साथ जुल्म ज्यादती हो रही है। दबंगों द्वारा पुलिस सुरक्षा में गरीबों की जमीनें हड़पी जा रही हैं, पुलिस निरंकुश होकर पक्षपातपूर्ण मनमानी कार्यवाही कर रही है तथा फरियादियों को ही प्रताड़ित कर रही है। उन्होंने कहा कि मौजूदा सरकार में अति पिछड़े समाज के लोग सर्वाधिक उत्पीड़न के शिकार होकर त्राहि–त्राहि कर रहे हैं। आवाहन किया कि समाज संगठित होकर जुल्म और अन्याय के खिलाफ अपने हक और अधिकार की आवाज को बुलंद करे।

बाबा कानपुरी को साहित्य गौरव सम्मान

हापुड़। अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा सन्तोष विश्वकर्मा उर्फ बाबा कानपुरी को साहित्य गौरव सम्मान से नवाजा गया है। परिषद के मेरठ प्रांत हापुड़ जिला इकाई द्वारा आयोजित संगोष्ठी 'अपनी साहित्य परम्परा' के अवसर पर पदाधिकारियों द्वारा फूल माला और सम्मान-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह संगोष्ठी होटल सिटी हार्ट, रेलवे रोड हापुड़ में आयोजित की गई थी।

इस अवसर पर अखिल भारतीय साहित्य परिषद के अध्यक्ष देवेन्द्र देव मिजार्पुरी सहित सभी पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

श्रेया एसोसिएट्स

Shreya Associates

धावा स्टेट, निकट मटियारी, लखनऊ-226028

विश्वकर्मा समाज के प्रति व विश्वकर्मा समाज के लिये मेरे विचार

Founder & M.D.
Poonam Vishwakrma

एक समय था, जब लोग विश्वकर्मा वंशियों का मान-सम्मान करते थे और करें भी क्यों न भई हम विश्वकर्मा (सृष्टि रचयिता) के वंशज हैं। परन्तु आज तो ऐसा नहीं दिखता, हम पिछड़े हुये हैं, क्योंकि विश्वकर्मा समाज में अशिक्षा है, एकता नहीं है। बड़े ही दु:ख के साथ कहना पड़ता है, कि हमारे विश्वकर्मा समाज में लोग हाथ बढ़ाकर मदद करने के बजाय पैर पकड़कर खींचने का प्रयास करते हैं।

कभी आपसे किसी ने कहा है- तुम कितने लोग हो? हह! तुम क्या कर सकते हो? तुमसे जो हो सकता है, कर लो। देखते हैं कौन है तुम्हारे पीछे।

जब स्वाभिमान को ठेस पहुंचता है, मन घायल होता है, तो बहुत ग्लानि होती है ना।

कभी आपने खुद के प्रश्न किया है, कि हमारी वास्तविकता क्या है, हम सर्वश्रेष्ठ कैसे हैं? हम हैं कौन?

अब यदि आपको लगता है, कि आप अपने लिए, धर्म के अस्तित्व के लिए, विश्वकर्मा वंशियों के अस्तित्व के लिए कुछ कर सकते हैं तो आइए साथ मिलकर ललकार करें, प्रभु विश्वकर्मा की जय जयकार करें।

मैं पूनम विश्वकर्मा फाउण्डर ऑफ श्रेया एसोसिएट्स, मैं व्यवहारिक रूप से व अपने फर्म के माध्यम से रोजगार क्षेत्र में विश्वकर्मा समाज के लोगों को प्राथमिकता देती हूं। मेरा उद्देश्य विश्वकर्मा समाज को आगे बढ़ाना है, इसके लिए मैंने निरन्तर व तत्पर रूप से कार्य किया है, विश्वकर्मा समाज में जरुरतमंद की मदद भी किया व आगे भी करती रहूँगी।

विश्वकर्मा समाज के प्रति मेरे उद्देश्य की पूर्ति के लिए परिवार के रुप में सहयोगी/ भागीदार बनें, क्योंकि हम सब एक परिवार हैं।

यदि आपके धमनियों में प्रभु विश्वकर्मा का रक्त है तो एकता की शक्ति को पहचानिए, भेदभाव खत्म कीजिए, शिक्षित बनिए, समाज में विश्वकर्मा परिवारों से मेल जोल/परिचय/ पहचान बढ़ाइए, किसी विश्वकर्मा परिवार के दु:ख की घड़ी में अन्य विश्वकर्मा परिवारों व अपने स्वयं से जो मदद कर सकते हैं, कीजिए।

एक बात याद रखिये, आज आप विश्वकर्मा समाज/परिवार के लिए खड़े हैं, तो कल व अनन्त काल तक विश्वकर्मा समाज/परिवार आपके मदद के लिए खड़ा रहेगा। अत: अपने पांव पसारिये। अनेक विश्वकर्मा, संगठन अध्यक्ष, राजनेता, कार्यकर्ता, डॉक्टर, समाजसेवक, अधिकारी के रुप में विश्वकर्मा समाज को और बड़ा बनाने में प्रयासरत हैं, आप भी प्रयास कीजिए, आपका योगदान महत्वपूर्ण है।

आप विश्वकर्मा (सृष्टि रचयिता) के वंशज हैं, आप कुछ भी कर सकते हैं।

Poonam Vishwakarma

Founder & M.D.
Poonam Vishwakrma

shreyaassociates.com +91 9628545000 +91 7897060124 shreyaassociates913@gmail.com
facebook.com/shreyaassociateslko Shreya Associates linkedin.com/in/shreyaassociateslko

बनवाएँ अपने सपनों का घर

हमारे यहाँ सभी प्रकार के भवन के नक्शे एवं निर्माण का कार्य कुशल इंजीनियरों के देखरेख में कान्ट्रेक्ट बेस पर किया जाता है।

हमारी सेवाएं

- ★ डिजाइन, ड्राइंग (नक्शा), इस्टीमेट, वैल्युवेशन।
- ★ सभी सिविल कंस्ट्रक्शन वर्क एक्सटीरियर व इन्टीरियर डिजाइन के साथ।
- ★ एडवाइजर एडवोकेट्स
- ★ 600 वर्गफुट एरिया का ए.सी. हॉल पार्टी/मीटिंग एवं अन्य कार्यक्रम हेतु 24 घंटे उपलब्ध है।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

सम्पर्क करें

SHREYA ASSOCIATES

Plot No. 310, Dhawa State, Goyala, Chinhat, Lucknow-226028

E-mail : shreyaassociates913@gmail.com, Website : www.shreyaassociates.com

Mob. 9628545000, 7897060124

श्री विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट (रेड ब्रिगेड) ने स्थापना दिवस पर किया वृक्षारोपण

जौनपुर। श्री विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट (रेड ब्रिगेड) के स्थापना दिवस व कारगिल विजय दिवस के अवसर पर श्री विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट (रेड ब्रिगेड) जौनपुर द्वारा 'पेड़ लगाओ, प्रकृति बचाओ अभियान' के तहत औद्योगिक नगरी में बढ़ते प्रदूषण को ध्यान में रखकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, सतहरिया के प्रांगण में वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया।

इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष राजेश विश्वकर्मा ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि, वृक्ष धरा की धरोहर है, समाज के सभी लोगों को अपने आसपास के वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए वृक्षारोपण अवश्य करना चाहिए।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक संजय राय ने रेड ब्रिगेड की सराहना करते हुए कहा कि, पहली बार किसी संस्था द्वारा ऐसा पुनीत कार्य किया गया है। उन्होंने भविष्य में ऐसे ही कार्यक्रमों को करने के लिए अग्रिम शुभकामनाएं भी दिया।

कार्यक्रम के इस अवसर पर डॉ0 रवीन्द्र प्रताप विश्वकर्मा (सचिव), दिनेश विश्वकर्मा (उपाध्यक्ष), कृष्णचन्द्र विश्वकर्मा, दयाशंकर विश्वकर्मा (सलाहकार), मनोज विश्वकर्मा, डॉ0 पी0के0 संतोषी विश्वकर्मा, गामा विश्वकर्मा, भानु प्रकाश विश्वकर्मा, बग्गड़ विश्वकर्मा, जोखुराम विश्वकर्मा, दिलीप विश्वकर्मा (SKDK टेन्ट) फूलचंद विश्वकर्मा, विशोक विश्वकर्मा, महेंद्र, सुरेश, सूरज, अशोक, सुनील, मनोज, रामचन्द्र, रामआशीष, चन्द्रेश, सचिन, गोविन्द, के0के0 विश्वकर्मा, संजय सहित स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारीगण भी उपस्थिति रहे।

भिन्न सोच रखने वाली रेड ब्रिगेड टीम ने स्थानीय प्रशासनिक अनुमति से वृक्षारोपण कर सतहरिया स्वास्थ्य केंद्र के प्रांगण को एक उद्यान में परिवर्तित कर दिया और साथ ही लगाए गए पौधों के देखरेख की जिम्मेदारी का भी संकल्प लिया।

ब्रिगेड के अध्यक्ष राजेश विश्वकर्मा ने टीम के सभी सदस्यों को वृक्षारोपण कार्यक्रम में सहयोग के लिये धन्यवाद दिया है।

न्यू फ्यूचर टेक्निकल इन्स्टीट्यूट द्वारा आयोजित हुआ प्रथम कम्प्यूटर कम्पटीशन पुरस्कार समारोह

आजमगढ़ । जनपद आजमगढ़ के नन्दांव बाजार स्थित चन्द्रशेखर इण्टर कालेज प्रांगण में आयोजित न्यू फ्यूचर टेक्निकल इन्स्टीट्यूट द्वारा आयोजित प्रथम कम्प्यूटर कम्पटीशन पुरस्कार समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व उच्च शिक्षा राज्यमंत्री रामआसरे विश्वकर्मा ने सभी प्रतियोगी छात्रों को पुरस्कार वितरित किया।

श्री विश्वकर्मा ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए आयोजक आकाश विश्वकर्मा आर0वी0जी0, राहुल विश्वकर्मा तथा विद्यालय के प्रबंधक चन्द्रशेखर यादव को सुदुर ग्रामीण क्षेत्र मे शिक्षा संस्थान खोलकर गांव के बच्चों को शिक्षित करने पर बधाई दिया। श्री विश्वकर्मा ने कहा कि आज के परिवेश में कम्प्यूटर का ज्ञान अति आवश्यक है। आज सोशल मीडिया और नेट के माध्यम से देश और दुनिया में सूचनाओं का आदान-प्रदान हो रहा है। गूगल पर जानकारी ने शिक्षा को आसान कर दिया है लेकिन आचरण और संस्कार माता-पिता और शिक्षक से ही मिलता है।

सम्मानित छात्रों के क्रम में संदीप यादव रैंक 3, बब्बी कुमार, वर्षा कुमारी, यश वर्मा, आसना विश्वकर्मा, करिश्मा विश्वकर्मा, रंजू मौर्या, दीपमाला, दिवाकर गौतम, प्रीति गौतम, वन्दना यादव, आराज्ञा, रोहन विश्वकर्मा सहित आदि छात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष रामअवतार विश्वकर्मा, विरेन्द्र विश्वकर्मा चेयरमैन नगर पंचायत बिलरियागंज, अर्जुन यादव, मोहम्मद अब्दुल्ला, बृजेश सरोज, जयसूर्या, मुकेश राजभर, डा0 हसनैन, संकेत यादव, धर्मेन्द्र गुप्ता, सूरज कुमार, निशान्त विश्वकर्मा, हिमांशु सिंह, सत्यम सिंह, मिथिलेश प्रताप, राहुल यादव, माथुर विश्वकर्मा सहित छात्र छात्राओं के अभिभावक भी उपस्थित थे।

-शिव प्रकाश विश्वकर्मा

Bhavya Decor
Interior's HUB
MODULAR KITCHEN & WARDROBE'S
E-mail: bhavyadecor@yahoo.com , www.bhavyadecor.com
90445 00999

महज 6 हजार रुपए के लिये 20 साल बंधुआ मजदूर बना रहा रामजी विश्वकर्मा

जालौन। जिले की एक घटना ने एक बार फिर गुलाम भारत के अतीत को याद करने पर मजबूर कर दिया है। जिन्होंने गुलामी के सिर्फ किस्से सुने हैं उन्हें यह घटना गुलामी के बानगी का अहसास करा सकती है। हमारे प्रधानमन्त्री 'न्यू इण्डिया' का नारा बड़े जोर से भले ही लगाते हैं परन्तु यह घटना गुलाम भारत का ही अहसास कराती है। द लल्लनटाप डॉट काम नामक एक न्यूज पोर्टल ने जिस तरीके से मामले का खुलासा किया है, सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो जा रहे हैं। कभी देश अंग्रेजों का गुलाम था और आज देश का गरीब, अमीरों का गुलाम बनने को मजबूर है।

20 साल बाद बंधुआ मजदूरी से आजाद रामजी विश्वकर्मा

यूपी का एक जिला है जालौन, जिसका मुख्यालय उरई है। उरई से 55 किलोमीटर दूर एक गांव गड़ेरना है जो थाना रेढ़र के अन्तर्गत आता है। यहां के निवासी रामजी विश्वकर्मा के बीस वर्षों की गुलामी की खबर है। बीस वर्ष बंधुआ मजदूरी, वो भी महज 6 हजार रुपयों के लिए। जानकारी के मुताबिक वर्ष 1999 में रामजी विश्वकर्मा के भाई एक सरकारी अस्पताल में जीवन–मौत से लड़ रहे थे। तब पैसे के लिये रामजी ने अपने गांव से 15 किलोमीटर दूर एक दरवाजे पर मदद के लिए हाथ फैलाया, दरवाजा था रामशंकर बुधौलिया का जो इलाके के जाने–माने दबंग नेता थे। रामजी के भाई का तो इलाज हो गया परन्तु उन पर दस हजार का कर्ज चढ़ गया। तब तक शायद रामजी को इस बात का इल्म भी नहीं था कि ये दस हजार उनके लिए 'सवा सेर गेंहूं' साबित होगा। मूलधन की चक्की घूमी तो ब्याज का अनंत आंटा निकलने लगा।

भाई की पत्नी केशकली व उनकी बेटी के साथ रामजी विश्वकर्मा

रामशंकर बुधौलिया ने रामजी विश्वकर्मा को अपने यहां बहैसियत बंधुआ मजदूर रख लिया। तब साल 1999 था और अब साल 2019 है। बीस बरस तक रामजी अपने मूलधन की चक्की में पिसते रहे। रामशंकर

बुधौलिया इलाके के और बड़े नेता बने, बाद में जिला पंचायत सदस्य हुए। रामजी विश्वकर्मा कुछ नहीं हुए, वो सिर्फ रामशंकर के घर मजदूरी करते रहे, दिन-रात। खाने में नमक कम और गाली ज्यादा, रोटी कम और मार ज्यादा खाते रहे।

रामजी की तो शादी हुई नहीं। रामजी के भाई जिनका इलाज कराया था उनकी पत्नी केशकली के अनुसार–

''वर्ष 1999 में हमारा आदमी बीमार पड़ा। रामशंकर बुधौलिया से 6 हजार रुपया लिया, उधार चुकाने के नाम पर। एवज में रामशंकर ने हमारे जेठ को अपने यहां बंधुआ रख लिया। साल भर बाद जब उन्हें छुड़ाने पहुंची तो हमें ललकार के भगा दिया। बोलने लगे कि अभी हमारा पैसा नहीं पटा। फिर इनको कई साल तक घर नहीं आने दिया। बिटिया की शादी में एक बार 5 हजार, और एक बार फिर कभी 5 हजार दिया। उसका ब्याज अपने मन से जोड़ने लगे। अभी जल्दी में हमें शौचालय के लिए सरकार से 6 हजार रुपए पहली किस्त मिली तब हमने दौड़-धूप करनी शुरू की। फिर से बीस साल बाद उरई गए। वहां से थाने में जाने को बोला गया। थाने के दरोगा जी हमारे जेठ को छुड़वा के लाए, हमसे दो जगह अंगूठा लगवाया। 26 जून 2019 को पूरा दिन हमारे जेठ को थाने में रखा तब जाकर रात को छोड़ा।'' और कुछ पूंछने पर केशकली जिह्वा के बजाय आंसू से ही जवाब देती हैं। अब केशकली को चिन्ता है कि शौचालय के पैसे का इन्तजाम कैसे होगा?

ये रोना सिर्फ केशकली का रोना नहीं है। इस महादेश के अनगिनत

रामजी के भाई की पत्नी केशकली

उन लोगों का रोना इसमें गुंथा हुआ है, जिन्हें कुछ लोगों का इंसान मानने का दिल ही नहीं करता। हमारी इस पुण्य-भूमि पर जाने कितने रामजी, जाने कितने रामशंकरों के यहां बंधुआ हैं जो आजादी का ख़्वाब देखते होंगे।

आज देश में अमीरी–गरीबी की खाई इतनी गहरी और लम्बी हो गई है कि मुकाबला कर पाना मुश्किल है। अमीर लोग अपने धन और शोहरत के बदौलत गरीबों का उत्पीड़न कर रहे हैं। यही कारण है कि जब केशकली से आगे की कार्यवाही के बारे में पूंछा गया तो उसने कहा– ''हम गरीब लोग हैं और वो अरपति, कैसे लड़ पायेंगे उनसे?''

इस बारे में जब जालौन पुलिस से जानकारी मांगी गई तो बताया गया कि– ''उक्त प्रकरण में दिनांक 27–06–2019 को अन्तर्गत धारा 344 भादवि का अभियोग पंजीकृत किया गया था। इसके बाद रामजी विश्वकर्मा को आजाद करा दिया गया है।''

समाजसेवियों और नेताओं को भनक तक नहीं–

कहने को तो विश्वकर्मा समाज के हजारों संगठन हैं। राष्ट्रीय अध्यक्षों और प्रदेश अध्यक्षों की भरमार है। नेताओं के बड़े और लच्छेदार भाषण, वाह! क्या कहना है। बोलते हैं तो लगता है माई–बाप यही हैं। विश्वकर्मा समाज का एक सदस्य किसी दबंग के यहां 20 साल तक बन्धक रहा और समाज के नेताओं को भनक तक नहीं? समाज के नेता जब मंच पर होते हैं तो उनके बड़े–बड़े दावे कि वह जमीन पर काम कर रहे हैं। गांव–गली, मुहल्ले, यहां तक कि हर दरवाजे दस्तक दे रहे हैं। शर्म आती है ऐसे लोगों पर जो खोखले दावे करते हैं।

प्रकरण गम्भीर आन्दोलन की जरूरत

विश्वकर्मा समाज से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों को उठाने वाले सामाजिक चिन्तक अरविन्द विश्वकर्मा ने इसे बहुत गम्भीर प्रकरण बताया है। उन्होंने कहा कि विश्वकर्मा समाज के संगठनों और नेताओं को आगे आकर इस प्रकरण पर आन्दोलन करना चाहिये। कहा कि, 20 वर्ष बाद बंधुआ मजदूरी से आजाद होने के बाद भी 10 हजार रुपए कर्ज के चुकाने पड़े। परन्तु 20 साल की रामजी की मजदूरी कैसे मिलेगी, इसे विश्वकर्मा समाज के लोगों को सोचना पड़ेगा। उन्होंने जालौन जिले के नेताओं को भी आड़े हाथों लेते हुये कहा कि, क्या जिला विश्वकर्मा समाज विहीन हो गया है या जिले में समाज के नेता नहीं हैं? यदि हैं तो उन्हें शर्म आनी चाहिये। 20 साल का समय बहुत होता है। इतने दिन में पैदा होने वाला बच्चा भी बाप बन जाता है।

भारत में भूख की समस्या और खाद्य की बर्बादी विस्तारण, कारण और निवारण

भारत में भूख की समस्या चरमोत्कर्ष पर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार विश्व के संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए भूख स्वयं में ही एक गंभीर समस्या है। विश्व स्वास्थ्य संगठन यही भी कहता है कि अब तक शिशु मृत्यु की कुल में से आधे मामले के लिए कुपोषण ही उत्तरदायी है। संयुक्तराष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार वर्तमान में एक विलियन से भी ज्यादा लोग पिड़ित हैं। इस ग्रह पर प्रति छः में से एक व्यक्ति भुखमरी से प्रभावित है। खाद्य पदार्थों की बर्बादी ही भुखमरी के लिए जिम्मेदार है।

हम लोग खाना खाने के समय आवश्यकता से अधिक खाना थाली में ले लेते हैं या परोसने वाले अधिक खाना परोस देते हैं जो खाने के बाद फेंक दिया जाता है। इसके अलावा भोज, होटल आदि में भी भोज्य पदार्थ बर्बाद हो जाते हैं। जितना भी पदार्थ हम लोग बेवजह बर्बाद करते हैं यदि उसे हम लोग जमाकर जरूरतमंद लोगों को दे दें, तो निश्चित रूप से बहुत सारे लोगों की भूख मिटायी जा सकती है। भूख का महत्वपूर्ण कारण ऊर्जा व्यय और ऊर्जा अंतर्ग्रहण के बीच असंतुलन है। हमारा शरीर जितना उर्जा ग्रहण करता है उससे अधिक व्यय करता है। इस असंतुलन का कारण एक या एक से अधिक हो सकता है। यह परिस्थितियां अवस्थाओं के कारण भी हो सकता है। भूख

लेखक- सत्यनारायण
छात्र- बी0ए0
(राजनीति विज्ञान सम्मान)
बनारसी लाल सर्राफ वाणिज्य महाविद्यालय, नवगछिया
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर (बिहार)
मोबाईलः
8877211531, 6202576559
ई-मेलः
satyanarayan0385@gmail.com
निवासः खरीक पुर्वीघारारी,

जितना भी पदार्थ हम लोग बेवजह बर्बाद करते हैं यदि उसे हम लोग जमाकर जरूरतमंद लोगों को दे दें, तो निश्चित रूप से बहुत सारे लोगों की भूख मिटायी जा सकती है।

निवारण के लिए खाद्य पदार्थों की बर्बादी रोकना है। हमें आवश्यकता से अधिक भोज्य पदार्थ नहीं बनाना चाहिए। यदि आवश्यकता से अधिक भोज्य पदार्थ बन जाए तो जरूरत से अधिक भोज्य पदार्थों को पड़ोस के जरूरतमंद लोगों के बीच बाँट देना चाहिए। हम लोगों को समाज में भी प्रचार करना चाहिए कि यदि आवश्यकता से अधिक किसी के घर में या भोज में भोजन बन जाए तो वे भी अपने पड़ोस के जरूरतमंद लोगों के बीच बांट दं। इस तरह से बहुत हद तक हम लोग अपने-अपने प्रयास के खाद्य सामग्री की बर्बादी पर नियंत्रण पा सकते हैं। खाद्य पदार्थों की बर्बादी की रोकथाम के लिए समाज के बुद्धिजीवियों, समाजप्रेमियों , गैर सरकारी संगठनों को प्रयास करना चाहिए। सरकार को भी चाहिए कि ऐसा नियम बनाया जाए जिससे खाद्य पदार्थों की बर्बादी नियंत्रित हो। कुछ विद्वानों की सोच है कि जगह-जगह कम्युनिटी फ्रिज लगवाया जाय, जहाँ आवश्यकता से अधिक खाद्य सामग्री को लोग डाल दें और खाद्य सामग्री को समाजसेवी या गैर सरकारी संगठन जरूरतमंद लोगों तक पहुंचा दें। हम लोगों को समाज में एक आंकड़ा तैयार करना चाहिए जिसमें जरूरतम के नाम की सूची हो जिसमें उन्हें खाद्य सामग्री भेज कर या भिजवा कर उसकी भूख मिटाई जा सकती है। समाज में एक समिति गठित करनी चाहिए जिसका उद्देश्य हो खाद्य सामग्री को बर्बाद होने से बचाना है। 'जरूरतमंद लोगों को भोज्य सामग्री भेजवाना है, भारत से भुखमरी मिटाना है। देश को भुखमरी मुक्त करना है।।'

नेतृत्व के सापेक्ष नागरिकता ज्यादा प्रासंगिक

जिस प्रकार बहुमंजिली इमारत की कल्पना मजबूत नींव के बिना अधूरी रह जाती है, ठीक उसी प्रकार सच्ची नागरिकता के बिना नागरिक समाज की बात बेमानी लगती है। सच्ची नागरिकता का तात्पर्य उस राष्ट्र, राज्य द्वारा सृजित कानूनों, रूढ़ियों, प्रथाओं, रीति-रिवाजों, परम्पराओं एवं उस समाज की सांस्कृतिक इतिहास से व उस देश जाति से परिचित होने व उसके सम्यक परिपालन से लिया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो समाज के व्यक्ति के कर्तव्यबोध से लिया जाता है।

जहां तक नेतृत्व का सवाल है तो अक्षम नेतृत्व से सक्षम समाज की कल्पना नितान्त दुर्भाग्यपूर्ण है। नेतृत्व करने वाले के लिये नागरिकता की समझ रखने का सवाल आजकल ज्यादा प्रासंगिक इसलिये होता जा रहा है क्योंकि नेतृत्वकर्ता के कन्धों पर नागरिक समाज के हर मसले को उचित मंच से उठाने व हल करने की नैतिक जिम्मेदारी होती है। नेतृत्व चाहे जिस समाज, संगठन, समुदाय, संस्था या दल का हो, इस परिपेक्ष्य में लोक कल्याण और जनहित, नेतृत्व के लिये सर्वोपरि होता है। सर्वविदित है कि समाज की दशा और दिशा तय कर आदर्श समाज स्थापित करने के लिये नेता के चारित्रिक विकास की परम आवश्यकता होती है। हिन्दी के किसी प्रसिद्ध लेखक ने 'नेता नहीं नागरिक चाहिये' शीर्षक से जनसामान्य को यह सन्देश देने की कोशिश की है कि समाज को सक्षम नेतृत्व कौन दे सकता है? समाज के लिये यह एक बड़ा सवाल है।

लेखक- शेषनाथ शर्मा

लोकतान्त्रिक व्यवस्था में नेतृत्व बहुमत के आधार पर तय किया जाता है। निर्वाचन प्रणाली में भी बहुमत के आधार पर नेतृत्व का पैमाना तय होता है। नागरिकता की पूर्ण समझ नेतृत्व देने में आवश्यक व मददगार साबित होती है।

किसी भी समाज व संगठन के नेतृत्व का दायित्व पारदर्शी, सच्चरित्र, समर्पित समाज के प्रति निष्ठावान व जनभावनाओं के मनोनुकूल व्यक्ति को सौंपना चाहिये, अन्यथा समाज दिशाहीन होकर व्यक्ति विशेष का मोहरा बनकर रह जाता है। आजकल प्रायः यह देखा जाता है कि कुछ पेशेवर किस्म के लोग समाज की विश्वसनीयता को 'ब्लैकमेल' करते हुये निजी हित चिन्तन में प्रयोग करते हैं और उसका व्यक्तिगत विकास में लाभ उठाते हैं और समाज मूकदर्शक बना रहता है। कपटपूर्ण नेतृत्व समाज को दिशाहीन भंवरजाल में फंसाती है। महात्मा गांधी जैसे युग पुरूष ने कहा है कि 'साध्य की प्राप्ति के लिये साधन की शुचिता यानी पवित्रता बहुत आवश्यक है। यदि साधन अपवित्र है तो साध्य यानी अभीष्ट की प्राप्ति की कल्पना कोरा बकवास है।'

किसी भी समाज व संगठन के नेतृत्व का दायित्व पारदर्शी, सच्चरित्र, समर्पित समाज के प्रति निष्ठावान व जनभावनाओं के मनोनुकूल व्यक्ति को सौंपना चाहिये, अन्यथा समाज दिशाहीन होकर व्यक्ति विशेष का मोहरा बनकर रह जाता है। आजकल प्रायः यह देखा जाता है कि कुछ पेशेवर किस्म के लोग समाज की विश्वसनीयता को 'ब्लैकमेल' करते हुये निजी हित चिन्तन में प्रयोग करते हैं और उसका व्यक्तिगत विकास में लाभ उठाते हैं और समाज मूकदर्शक बना रहता है। कपटपूर्ण नेतृत्व समाज को दिशाहीन भंवरजाल में फंसाती है। महात्मा गांधी जैसे युग पुरूष ने कहा है कि 'साध्य की प्राप्ति के लिये साधन की शुचिता यानी पवित्रता बहुत आवश्यक है। यदि साधन अपवित्र है तो साध्य यानी अभीष्ट की प्राप्ति की कल्पना कोरा बकवास है।'

समाज के लिये बौद्धिक वर्ग की नैतिक जिम्मेदारी है कि समाज की बागडोर किसी व्यक्ति को सौंपते समय उसकी सत्यनिष्ठा, समर्पण व नेतृत्व क्षमता की पूर्व परख कर लें अन्यथा पूरा समाज व्यक्ति विशेष का हित साधन बनकर रह जायेगा। अतएव देश व समाज के नेताओं के लिये परम आवश्यक है कि सर्वप्रथम अपने अन्दर एक सच्चे नागरिक होने का पूरा गुण विकसित करें फिर नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ेंगे तो निकट भविष्य में गलतियों से बच सकेंगे और सक्षम नेतृत्व दे सकेंगे अन्यथा समाज से नकार दिये जायेंगे।

मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुई भगवान विश्वकर्मा की हुई प्राण-प्रतिष्ठा

ब्रह्मचारी गंगाशरण मिश्र ने विधि विधान से पूजन अर्चन के बाद कराई मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा

आजमगढ़। जिले के मुबारकपुर नगर स्थित नूरपुर सरायहाजी गांव में भगवान विश्वकर्मा मन्दिर में विश्वकर्मा भगवान की मूर्ति स्थापना विधिवत पूजन अर्चन के बाद प्राण प्रतिष्ठा की गयी। देवशिल्पी भगवान विश्वकर्मा के प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व आकर्षक झांकी निकाली गयी। जो मंदिर परिसर से शुरू होकर रोडवेज, समौधी, नगर पालिका, शाह मोहम्मदपुर, कटरा, मुबारकपुर थाना होते हुए मंदिर पर पहुंचकर संपन्न हुआ। जहां ब्रह्मचारी गंगाशरण मिश्र ने विधि विधान से पूजन अर्चन के बाद भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति की स्थापना की गयी।

भक्तों ने भगवान विश्वकर्मा की जय, हर-हर महादेव के जयघोष किये, जिससे सम्पूर्ण वातावरण भक्तिमय हो गया। इस अवसर पर विश्वकर्मा समाज के पूर्व जिलाध्यक्ष रविभूषण विश्वकर्मा ने कहा कि ग्रामीणों के सहयोग से भगवान विश्वकर्मा की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा की गयी है। इसमें सभी का सहयोग सराहनीय रहा।

इस मौके पर हरिश्चंद्र, डॉ0 श्रीराम विश्वकर्मा, श्यामा प्रसाद शर्मा, छविराज, रामाशंकर शर्मा, रामाधार विश्वकर्मा, पीयूष शर्मा, डॉ0 विनोद शर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

www.richinternational.in

Rich INTERNATIONAL

Office:. 022 26681888
Helpline:. +91 9323004818
E-mail:. richinternational.in@gmail.com

Station...

अध्यापक गिरिजेश विश्वकर्मा ने चित्रों से सजा दी स्कूल की दीवार

जौनपुर। जिले के मछलीशहर क्षेत्र के सरकारी स्कूलों में पढ़ाई और व्यवस्था की जितनी भी आलोचना हो लेकिन ऐसे अध्यापकों की कमी नहीं है जो स्कूल और बच्चों का भविष्य संवारने में लगे हैं। मछलीशहर ब्लाक के अभिनव प्राथमिक स्कूल अदारी के अध्यापक गिरिजेश कुमार विश्वकर्मा ने विद्यालय को चित्रों से सजा दिया है।

अदारी स्कूल में नव नियुक्त अध्यापक गिरिजेश कुमार विश्वकर्मा स्कूल को सजाने-संवारने में जुटे हैं। उन्होंने दीवारों को सुंदर चित्रों और सुभाषितों से सजाया है। सुंदर तरीके से रंगा हुआ चित्र बच्चों व अभिभावकों को सहसा अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। अध्यापक गिरिजेश विश्वकर्मा का कहना है कि वह इसके पहले सुइथाकला ब्लाक में थे। वह जब इधर से गुजरते तो अदारी स्कूल सुंदर देख उनके मन मे अभिलाषा होती थी की वह इस स्कूल में अपना योगदान दें। पंवारा थाना के हिम्मतपुर गांव निवासी गिरिजेश विश्वकर्मा स्कूल दूर होने के बाद भी समय से स्कूल पहुंच कर बच्चों को पठन-पाठन कार्य के साथ-साथ खाली समय में स्कूल की दीवारों व चहारदीवारी पर चित्रकारी करके सुंदर बना रहे है। वह स्थानांतरित होकर आए हैं।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक आनंद प्रकाश सिंह कहते हैं कि गिरिजेश विश्वकर्मा स्कूल की दिवारों पर चित्रकारी करके सुंदर बना रहे हैं। अध्यापिका शशिकला तिवारी ने उनके इस प्रयास की सराहना की है। विद्यालय में आने वाले बच्चे भी अध्यापक श्री विश्वकर्मा से बहुत प्रभावित हैं तो अभिभावक भी खुश हैं।

श्रद्धा विश्वकर्मा को मिला बेस्ट एनसीसी गर्ल्स कैडेट्स का खिताब

सिवनी। शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिवनी की सीनियर डिवीजन एनसीसी की गर्ल्स कैडेट्स सारजेन्ट श्रद्धा विश्वकर्मा पिता संतोष विश्वकर्मा बी0कॉम षष्टम सेमेस्टर की छात्रा को एनसीसी निदेशालय भोपाल द्वारा एनसीसी-डे अवार्ड अंतर्गत तीन हजार रुपए की प्रोत्साहन राशी से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड मुख्यालय जबलपुर के अंतर्गत 24 म0प्र0 बटालियन एनसीसी छिन्दवाड़ा अंतर्गत बेस्ट गर्ल्स कैडेट्स के रूप में श्रद्धा विश्वकर्मा को

प्रदान किया गया। प्रचार्य सतीष चिले एवं डॉ0 मेजर अरविंद चैरसिया द्वारा कैडट्स को महाविद्यालय में सम्मानित करते हुए, उज्जवल भविष्य की कामना की ।

कभी गरीबी के कारण नहीं निकाल पाईं एलबम अब बंदना धीमान के गाने हर जुबां पर

हमीरपुर (हि0प्र0)। गरीबी के कारण कभी एलबम नहीं निकाल पाईं थीं, लेकिन आज उनके भजन हर किसी की जुबां पर हैं। ऐसी ही कहानी है मैहरे निवासी बंदना धीमान की। बंदना को बचपन से ही गाने का शौक था। उन्हें खुद पर विश्वास था। गरीबी भी उनकी कला को नहीं छुपा पाई और न ही उनका विश्वास डगमगाया।

वंदना ने सात साल की उम्र में स्टेज पर गाना शुरू किया। इसके बाद अनेकों प्रस्तुतियां विभिन्न मंचों पर दीं। वंदना की शादी वर्ष 2007 में परविंद्र कुमार से हुई। परविंद्र खुद संगीतकार हैं। पति का सहयोग मिलने के बाद बंदना ने अपनी एलबम निकालनी शुरू की। उनकी सबसे पहली एलबम सौण महीना को लोगों ने काफी सराहा। इसके बाद एक के बाद एक एलबम निकालती गईं। उन्होंने खुद की 12 एलबम निकाली हैं। इनमें से मंदरा द नजारा..., मन मोह लिया कुंडलया वालेया..., पानी री टांकी..., मेरे सद्गुरु प्यारे.. आदि हिट रहीं। मन मोह लिया कुंडलया वालेया...गाने को तो यू ट्यूब पर 20 लाख से अधिक लोग देख चुके हैं।

पैसे न होने के चलते छोड़नी पड़ी थी संगीत की शिक्षा-

वंदना का कहना है कि बचपन से माता-पिता ने कभी गाने से नहीं रोका। लेकिन तीन माह के लिए वह जब हमीरपुर में संगीत सीखने के लिए जाती रहीं तो पैसे की कमी और हमीरपुर दूर होने के कारण उन्हें संगीत सीखना छोड़ना पड़ा। पिता दर्जी का काम करते थे। इसलिए पैसे की कमी आड़े आई, लेकिन शादी के बाद पति ने पूरा सहयोग किया।

मन मोह लेया कुंडला वालेयां... से मिली शोहरत-

सभी गाने हिट रहे, लेकिन मन मोह लेया कुंडला वालेयां.. और मदरां द नजारा... इन दोनों गानों ने उन्हें शोहरत दिलाई। वह मुम्बई, दिल्ली, चंडीगढ़, उत्तराखंड आदि शहरों में विभिन्न मंचों पर प्रस्तुतियां दे चुकी हैं। उन्होंने कहा कि पहले वह धर्मिक गाने ही गाती थीं, लेकिन अब लोगों की मांग पर वह अन्य गाने भी गाने लगी हैं। जल्द ही उनकी नई एलबम आएगी। उन्होंने कहा कि माता-पिता और बड़ों के आदर के साथ-साथ दृढ़ विश्वास से जीवन में सफलता पाई जा सकती है।

हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुरूप प्रयोग

इतने विस्तृत क्षेत्र की भाषा होने के बावजूद हिन्दी का जितना व्यापक व्यवहार होना चाहिए था, वह क्यों नहीं हो पाया। इसका एक कारण जहां भारतीयों का अंग्रेजी के प्रति अतिशय मोह है वहीं दूसरी ओर जन भाषा हिन्दी के स्थान पर संस्कृत आधारित शब्दों के प्रयोग को ही बढ़ावा देने की प्रवृत्ति एवं मानसिकता भी है। हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप प्रयोग को बढ़ावा देने पर ही इसका प्रसार सम्भव है। इस सम्बंध में, मैं हिन्दी के भाषिक स्वरूप के सम्बंध में भी कुछ विचार व्यक्त करना चाहता हूं। मेरे कुछ मित्र हिन्दी में केवल संस्कृत आधारित शब्दों के प्रयोग के हिमायती हैं। मेरा विचार अलग है। मेरा मत है कि हिन्दी भाषा के प्रसार के लिए हमें जनभाषा हिन्दी को अपनाने पर बल देना चाहिए। किसी भी विकसित भाषा के अनेक रूप और व्यवहार क्षेत्र होते हैं। यथा- (1) साहित्यिक, (2) वैज्ञानिक, (3) तकनीकी, (4) व्यवसायिक, (5) वाणिज्यिक, (6) प्रशासनिक आदि आदि।

इनकी अलग अलग प्रयुक्तियां एवं शैलियां होती हैं। मगर समस्त रूप जनभाषा से ही उद्भुत होते हैं। जनभाषा से इनका अलगाव कम से कम होना चाहिए। बोलचाल की सहज, रवानीदार एवं प्रवाहशील भाषा पाषाण खंडों में ठहरे हुए गंदले पानी की तरह नहीं होती। पाषाण खंडों के ऊपर से बहती हुई अजस्त्र धारा की तरह होती है। नदी की प्रकृति गतिमान होना है। भाषा की प्रकृति प्रवाहशील होना है। संस्कृति में परिवर्तन होता है, हमारी सोच तथा हमारी आवश्कताएं परिवर्तित होती हैं उसी अनुपात में शब्दावली भी बदलती है। स्थिर होना जड़ होना है। बहुलतावाद को स्वीकरना गतिमान होना है। देश के यथार्थ को स्वीकारना है।

मैं इस तथ्य को रेखांकित करना चाहता हूं कि स्वतंत्रता के बाद हमारे राजनेताओं ने हिन्दी की घोर उपेक्षा की। पहले यह तर्क दिया गया कि हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का अभाव है। इसके लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग बना दिया गया। काम सौंप दिया गया कि शब्द बनाओ। शब्द गढ़ो। शब्द बनाए नहीं जाते। गढ़े नहीं जाते। लोक के प्रचलन एवं व्यवहार से विकसित होते हैं। आयोग ने जिन शब्दों का निर्माण किया, उनमें से अधिकतर शब्द जटिल, क्लिष्ट एवं अप्रचलित थे। चूंकि शब्द गढ़ते समय यह ध्यान नहीं रखा गया कि वे सामान्य आदमी की समझ में आ सकें, इस कारण आयोग के द्वारा बनाए गए 80 प्रतिशत शब्द कोषों की शोभा बनकर रह गए हैं। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दों के निर्माण के लिए जिन विशेषज्ञों को काम सौंपा उन्होंने जन प्रचलित शब्दों को अपनाने के स्थान पर संस्कृत का सहारा लेकर शब्द अधिक गढ़े। आयोग ने जिन शब्दों का निर्माण किया उनमें से अधिकांशतः अप्रचलित, जटिल एवं क्लिष्ट हैं। सारा दोष आयोग एवं विशेषज्ञों का भी नहीं है। मैं उनसे ज्यादा दोष मंत्रालय के अधिकारियों का मानता हूँ। प्रशासनिक शब्दावली बनाने के लिए अलिखित आदेश दिए गए कि प्रत्येक शब्द की स्वीकार्यता के लिए मंत्रालय के अधिकारियों की मंजूरी ली जाए। अधिकारियों की कोशिश रही कि जिन शब्दों का निर्माण हो, वे बाजारू न हो। सरकारी भाषा बाजारू भाषा से अलग दिखनी चाहिए। मैं अपनी बात को एक उदाहरण से स्पष्ट करना चाहता हूं। प्रत्येक मंत्रालय में सेक्रेटरी तथा एडिशनल सेक्रेटरी के बाद मंत्रालय के प्रत्येक विभाग में ऊपर से नीचे के क्रम में अंडर सेक्रेटरी होता है। इसके लिए निचला सचिव शब्द बनाकर मंत्रालय के अधिकारियों के पास अनुमोदन के लिए भेजा गया। अर्थ संगति की दृष्टि से शब्द संगत था।

मंत्रालयों के अधिकारियों को आयोग द्वारा निर्मित शब्द पसंद नहीं आया। आदेश दिए गए कि नया शब्द बनाया जाए। आयोग के चेयरमेन ने विशेषज्ञों से अनेक वैकल्पिक शब्द बनाने का अनुरोध किया। अंडर सेक्रेटरी के लिए नए शब्द गढ़ने में विशेषज्ञों ने व्यायाम किया। जो अनेक शब्द बनाकर मंत्रालय के पास भेजे गए उनमें से मंत्रालय के अधिकारियों को 'अवर' पसंद आया और वह स्वीकृत हो गया। अंडर सेक्रेटरी के लिए हिन्दी पर्याय 'अवर सचिव' चलने लगा। मंत्रालयों में सैकड़ों अंडर सेक्रेटरी काम करते हैं और सब 'अवर सचिव' सुनकर गर्व का अनुभव करते हैं। शायद ही किसी अंडर सेक्रेटरी को अवर के मूल अर्थ का पता हो। स्वयंबर में अनेक वर विवाह में अपनी किस्मत आजमाने आते थे। -लेखक

अर्थशास्त्र के भी जानकार थे बाबा साहब

दुनिया भले ही बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर को कानून और संविधान के एक विशेषज्ञ के तौर पर जानती है पर यह भी सच है कि वह सही मायने में एक अर्थशास्त्री थे। जी हां, बाबा साहेब को अर्थशास्त्र की इतनी गहरी जानकारी थी कि उन्होंने 1950 के दशक में ही कृषि क्षेत्र के औद्योगीकरण पर जोर दिया था। जानेमाने दलित चिंतक चन्द्रभान प्रसाद के अनुसार बाबा साहेब सही मायने में एक अर्थशास्त्री थे। उन्होंने कृषि क्षेत्र के औद्योगीकरण की बात बहुत पहले ही कह दी थी। अम्बेडकर ने कहा था कि कृषि क्षेत्र को मुनाफे का सौदा बनाने के लिए यह जरूरी है। लोगों को आध्यात्मिक आजादी दिए जाने के पक्षधर बाबा साहेब ने आधुनिक भारत को फिर से एक रंग रूप में ढालने के लिए कृषि को उद्योग का रूप देने की वकालत की थी। प्रसाद ने कहा कि क्रांतिकारी विचारों वाले अम्बेडकर 'ग्राम स्वराज' की संकल्पना के भी खिलाफ थे। वह गांवों को लोकतंत्र की मूल इकाई बनाए जाने के खिलाफ थे। उनका कहना था कि गांव के बदले व्यक्ति को लोकतंत्र की मूल इकाई बनाया जाए ताकि सही मायने में लोकतंत्र का वजूद रहे।

चन्द्रभान प्रसाद ने कहा कि विदेश नीति को लेकर भी बाबा साहेब तत्कालीन सरकार के रुख के खिलाफ थे। उनका कहना था कि भारत को न तो गुटनिरपेक्ष आंदोलन के साथ रहना चाहिए और न ही सोवियत संघ का दामन थामना चाहिए, बल्कि विकास

और प्रगति के लिए अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के साथ चलना चाहिए। आल इंडिया कनफेडरेशन आफ एससी, एसटी आगेर्नाइजेशन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष विनोद कुमार ने बताया कि बाबा साहेब का दर्शन पूरे समाज के लिए था, जिसमें महिलाएं भी शामिल थीं। इसी संबंध में बाबा साहेब ने तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से विचार-विमर्श के बाद महिलाओं को संपत्ति और समानता का अधिकार दिलाने के लिए संसद में एक बिल पेश किया था। लेकिन मनुवादी मानसिकता के लोगों ने इसका विरोध किया। इसी से खिन्न होकर उन्होंने कानून मंत्री के पद से त्यागपत्र दे दिया और बौद्ध धर्म की ओर मुड़ गए। कुमार ने कहा कि उनका दर्शन पूरे समाज के लिए था लेकिन बदकिस्मती यह है कि आज भी उन्हें एक दलित नेता के रूप में ही जाना जाता है। उन्होंने जातिविहीन समाज की स्थापना का सपना देखा था लेकिन तथाकथित अम्बेडकरवादी आज जातिवाद को मजबूत करके ही अपनी राजनीति कर रहे हैं। बाबा साहेब ने अमेरिका और इंग्लैंड जाकर आला दर्जे की तालीम हासिल की थी। वहीं से उन्होंने कानून की डिग्री भी हासिल की। उन्होंने कानून, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में डॉक्टरेट भी हासिल किया था।

भारत लौटने पर उन्होंने कुछ समय तक कानून की प्रैक्टिस की और उस दौर में भारत में अछूत माने जाने वाले वर्ग के लोगों के राजनीतिक अधिकारों तथा सामाजिक आजादी की वकालत करते हुए एक जरनल का प्रकाशन शुरू किया। काबिलियत तथा विद्वता के चलते ही बाबा साहेब को स्वतंत्र भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए संविधान सभा की ओर से गठित संविधान मसौदा समिति का अध्यक्ष बनाया गया था। वह भारत के पहले कानून मंत्री भी थे। 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के मिलिट्री हेडक्वार्टर आफ वॉर में पैदा हुए डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर को 1990 में देश के सबसे बड़े नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। 14 अप्रैल के दिन ही देशभर में उनका जन्मदिन मनाया जाता है और सरकार ने इस दिन को सार्वजनिक अवकाश भी घोषित किया। इस दिन देशभर में विभिन्न दलित संगठन उनकी याद में विशाल जुलूस का आयोजन करते हैं। इस दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है।

(साभार)

रोग भगाए, खाने में खुशबू लाए तुलसी

तुलसी का न केवल धार्मिक बल्कि औषधीय महत्व भी है। कहते हैं जिस आंगन में तुलसी का पौधा होता है वहां परिवार स्वस्थ और खुशहाल रहता है। तुलसी का महत्व हमारे किचन में भी है। एशियाई और मेडिटेरेनयन खाने में तुलसी का इस्तेमाल किया जाता है। इसके पत्तों की खुशबू खाने में गजब का फ्लेवर लाती है। पास्ता, पिज्जा, करी, सूप, सॉसेज और सलाद में इसका जादू नजर आता है।

बेसिल यानी तुलसी कई तरह की होती हैं। स्वीट बेसिल, थाई बेसिल, लेमन बेसिल, पर्पल बेसिल और सिनासन बेसिल। यह सब हर्ब खाने में इस्तेमाल होती है पर इनमें से कुछ का इस्तेमाल पारम्परिक चीनी और भारतीय दवाइयों में किया जाता है। हमारे घर की तुलसी का भी कम महत्व नहीं है। पवित्र पौधा होने के कारण इसकी पूजा तो होती ही है, साथ ही यह हाइपरटेंशन, सांस से सम्बन्धित समस्याएं, डायबिटिज, घाव और दूसरी कई परेशानी में भी इस्तेमाल किया जाता है।

हर्बल व्यवयासी ज्यादातर इसकी जड़ और पत्तियों का इस्तेमाल चाय के लिए करते हैं। कभी-कभी इसे सजावट के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। तुलसी की पत्तियों में दुर्लभ तेल मौजूद होते हैं जैसे फिमोनिन और यूजिनॉल। इनमें प्रचुर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट गुण मौजूद होते हैं। यही चीजें पौधे को बैक्टिरिया, फंगी और कीड़ों से भी बचाती है। एक अध्ययन के मुताबिक तुलसी का अर्क कई

कीटाणुओं को बढ़ने से रोकने में मददगार है। सालमोनेला और ई-कोलाई, बैक्टीरिया, वायरस, हेपेटाइटिस 'बी' और एडिनोवायरस जैसे कीटाणुओं को शरीर में बढ़ने नहीं देता। तुलसी के अर्क में एंटी-इनफ्लैमॅटरी गुण, ब्लड-शुगर कम करने का गुण, प्रतिरोधक क्षमता का गुण और एंटी-कैंसर तत्व भी मौजूद होते है। एक और अध्ययन के मुताबिक दूसरे हर्ब के मुकाबले तुलसी ओरल कैंसर की कोशिकाओं को बढ़ने से भी रोकने में मदद करती है।

तुलसी, पोटाशियम, विटामिन 'के', 'सी', कैल्शियम और आयरन का बेहतरीन स्त्रोत है। इसका सही फायदा तभी है जब आप प्रचुर मात्रा में इस हर्ब का सेवन करें। बैंगनी रंग के बेसिल में ऐथोसायनिन नामक एंटीआक्सीडेंट मौजूद होते हैं। अध्ययन में यह बात भी साबित हुई है कि तुलसी का सेवन करने से ब्लड शुगर कम होता है। कुछ लोग इसे कैपसूल के रूप में तो कुछ चाय के रूप में पसंद करते हैं। स्ट्रेस कम करने में भी बेसिल बेहद फायदेमंद है। 2012 में भारत में हफ्ते तक किए गए अध्ययन में यह पाया गया कि तुलसी स्ट्रेस के लक्षणों को कम करने में मदद करती है। यह मेमोरी बढ़ाती है और मोटापा घटाने में मदद करती है।

कहते हैं पवित्र तुलसी की कुछ पत्तियां हर दिन एक ग्लास पानी में डालकर पीने से दिन भर ऊर्जा बनी रहती है। वजह चाहे जो भी हो पर सच तो यह है कि तुलसी सलाद, सैंडविच, सूप और दूसरी कई रेसिपी में गजब का फ्लेवर बनाती है। अगर आपके पास ताजे बेसिल के पत्ते न हों तो सूखी पत्तियां भी इस्तेमाल कर सकते हैं। मगर जहां तक हो सके अपने बेहतर स्वास्थ्य के लिये हमेशा तुलसी के ताजे पत्ते का इस्तेमाल करें।

देश सेवा का मजा

देश सेवा बड़ी मजेदार चीज है। नेताओं को इसमें बड़ा मजा आता है। नहीं आता तो इतनी ज्यादा करते क्या? सारे नेता बड़े मजे में निष्काम भाव से देश सेवा करते हैं। निष्काम भाव से क्यों करते हैं? क्योंकि निष्काम में काम होता है। अगर, आपको यह बात समझ में नहीं आ रही है तो इसका मतलब है आप अंग्रेजी व्याकरण नहीं जानते। आप पूछेंगे हिंदी पढ़ने के लिए अंग्रेजी व्याकरण की क्या जरूरत है? तो, इसका मतलब यह भी हुआ कि आप हिंदी पढ़ने की आधुनिक तकनीक नहीं जानते। आइए, मैं आपको हिंदी पढ़ने की अंग्रेजी तकनीक संक्षेप में बता देता हूं। अंग्रेजी के कुछ शब्दों में, कुछ अक्षर साइलेंट हुआ करते हैं। वे लिखे तो जाते हैं पर बोले नहीं जाते, जैसे साइकॉलॉजी का 'पी'। उसी तरह देशभक्ति के निष्काम में, काम होता है क्योंकि राजनीति के व्याकरण में निष साइलेंट है। अगर, आप अब भी नहीं समझे तो आप में राजनीति का व्याकरण समझने की समझ नहीं है। हिंदुस्तान में देश इसलिए मजेदार है कि यहां की राजनीति में बहुत मजा है। स्थानीय मजा है, राष्ट्रीय मजा है, अंतर्राष्ट्रीय मजा है। मतलब यह कि मजा ही मजा है। जितनी तरह के मजे हैं, सब राजनीति में मिलते हैं। भौतिक मजा है, मानसिक मजा है, आर्थिक मजा है और ऊपर से शोहरत का मजा। अगर, आप इस बात से सहमत नहीं हैं तो सोच कर बताइए आपने कभी कोई ऐसा नेता देखा है जो मजे में न हो? जी हां, नेता हमेशा मजे में रहता है। नेता मजा करता है, देश उसका बिल चुकाता है।

नेताओं को वादा करने में बड़ा मजा आता है। आपको कोई ऐसा नेता नहीं मिलेगा जो वादा न करता हो। जितने नेता, उतने वादे। जितना बड़ा नेता, उतना बड़ा वादा। आप सोच रहे होंगे छोटे वादे और बड़े वादे में कोई फर्क होता होगा। जी नहीं, कोई फर्क नहीं होता। वादा बड़ा हो या छोटा, उसमें करना क्या होता है? बस जीभ ही तो हिलानी होती है! जब कहो, जहां कहो नेता हिला देगा। नेता तो जीभ हिला कर चला जाता है, पर समस्या अपनी जगह से नहीं हिलती। हिलेगी भी क्यों? समस्या को हिलाने के लिए जी नहीं, दूसरा बहुत कुछ हिलाना पड़ता है। वह नेता नहीं हिलाता, उसमें कोई मजा नहीं है।

नेताओं को विचार करने में भी बड़ा मजा आता है। विचार करने में तो जीभ भी नहीं हिलानी पड़ती। बस, एक दिशा में आंख गड़ा दो, और बैठे रहो। अगर, उस दिशा में कोई सुंदर स्त्री बैठी हो तो आंख और भी आसानी से गड़ जाती है। एक नेताजी हर शाम को विचार करने बैठ जाते हैं। सामने आंख गड़ा कर स्थिर दृष्टि से विचार करते हैं। बहुत दिन बाद लोगों को पता चला कि ये जो नेता जीभ की स्थिर दृष्टि वाली विचार मुद्रा है, वह वास्तव में विचार योग्य नहीं है, अफीम की पीनक है।

मजे का एक बुनियादी सिद्धांत है। जिसको जो करने में मजा आता है, वह उसे करते रहना चाहता है। यह सिद्धांत सबके ऊपर लागू होता है। जैसे कि हमारे देश में समस्या को खड़ी रहने में मजा आता है, नेता को विचार करने में मजा आता है, जनता को देखते रहने में मजा आता है। नहीं आता है तो जनता चुपचाप देखती क्यों रहती है?

मैं जानता हूं, आप जरूर सोच रहे होंगे कि यह सब लिखने में मुझे बड़ा मजा आ रहा है। बिलकुल आ रहा है। आपको पढ़ने में आ रहा है कि नहीं? आइए, हम सब लोग मजा करें। और देश? देश कोई बच्चा है क्या, जो हम उसकी फिक्र में दुबले हों!

(संकलित)

कन्याकुमारी की यात्रा का अनुभव अद्भुत है

भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित पवित्र स्थान कन्याकुमारी के बारे में कहा जाता है कि स्वामी विवेकानंद जब ज्ञान की खोज में निकले थे तो यहीं पहुंच कर उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यहां अरब सागर और बंगाल की खाड़ी हिंद महासागर में आकर मिलते हैं। इसलिए यहां तीन अलग.अलग रंगों की रेत देखने को मिलती है।

शहर की भीड़ से दूर तथा तनाव व शोरगुल से भी दूर यह स्थान बड़ा शांतिमय है। यहां यदि शोर है तो वह है सिर्फ समुद्री लहरों का, जोकि कानों में संगीत की तरह गूंजता है। कन्याकुमारी के सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य तो देखते ही बनते हैं।

कन्याकुमारी का मंदिर कन्याकुमारी को ही अर्पित है। इस मंदिर को भारत के छोरों का रखवाला भी माना जाता है। इस मंदिर को मदुरै, रामेश्वरम और तिरूपति आदि मंदिरों की तरह ही पवित्र माना जाता है। इस मंदिर की खास बात यह है कि यहां केवल हिन्दू ही जा सकते हैं। यह मंदिर प्रातः चार बजे से लेकर ग्यारह बजे तक तथा उसके बाद सायं 5.30 से लेकर 8.30 तक खुला रहता है। यहां विवेकानन्द जी का स्मारक भी है। यह समुद्र के बीच एक विशाल शिला पर स्थित है। इस शिला पर बैठ कर ही स्वामी विवेकानंद जी ने साधना की थी। स्मारक के कक्ष में विवेकानन्द जी की विशाल मूर्ति भी है। स्मारक स्थल से चारों और फैले विशाल समुद्र का दृश्य आपको मंत्रमुग्ध कर देगा।

कन्याकुमारी में महात्मा गांधी का स्मारक भी है। यहीं पर महात्मा गांधी का अस्थि कलश रखा गया था। यह स्मारक कन्याकुमारी मंदिर के ठीक पास ही बना हुआ है।

कन्याकुमारी में महात्मा गांधी का स्मारक भी है। यहीं पर महात्मा गांधी का अस्थि कलश रखा गया था। यह स्मारक कन्याकुमारी मंदिर के ठीक पास ही बना हुआ है। पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र यह स्मारक अपनी अद्भुत कलाकृति के लिए भी जाना जाता है।

कन्याकुमारी से लगभग 34 किलोमीटर दूर स्थित उदयगिरि किला भी देखने योग्य है। इस किले को 18वीं शताब्दी में राजा मार्तंड वर्मा ने बनवाया था। इसके साथ ही आप गुगनंत स्वामी मंदिर भी देखने जा सकते हैं। इस मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह करीब एक हजार साल पुराना मंदिर है। इस मंदिर को एक चोल राजा ने बनवाया था। कन्याकुमारी आए हैं तो सुचिंद्रम देखना नहीं भूलें। यह कन्याकुमारी से लगभग 13 किलोमीटर दूर स्थित है। 9वीं शताब्दी के शिलालेख इस मंदिर में पाए जाते हैं। यहां पर भगवान शिव, भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु की एक साथ पूजा की जाती है। यहां पर हनुमान जी की एक बड़ी मूर्ति है जो कि यहां की मूर्तिकला का जीता-जागता उदाहरण है।

नागरकोयिल नागराज का अद्भुत मंदिर है। नागराज का मंदिर होते हुए भी इसमें भगवान शिव और भगवान विष्णु की मूर्तियां है। यहां का द्वार चीनी शिल्पकला में बनाया गया है। यहां आपको देखने को मिलेगा कि भक्तों को दिया गया प्रसाद जमीन से निकाला जाता है। यहां नागलिंग फूल भी पाया जाता है। यह मंदिर कन्याकुमारी से बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां तक पहुंचने के लिए आपको आसानी से बसें मिल जाएंगी और यदि आप चाहें तो बंगलौर, चेन्नई, त्रिवेन्द्रम, मदुरै आदि जगहों से यहां रेल व सड़क मार्ग से भी आ सकते हैं।

रचयिता-
चन्द्र विजय प्रसाद 'चन्दन'
देवघर, झारखण्ड

दूर खड़ी क्या देख रही आंखों में यूँ तुम लोर लिए,
चलो पाषाण परत पर यशगान लिखें नव भोर लिए।

पीड़ा में आनंद मनाता कौन है व्यथा-कथा सुनाता,
नीरस जीवन चाँदनी सी इतराती कौन है इंजोर लिए।

मौन भली अश्रु बहाती नित्य सहती क्यों अत्याचार,
झुलस रही सावन में जैसे पावस ने झकझोर लिए।

जिनका जीवन यौवनरत वही सबल सब दृष्टिगत है,
भले चाक पे पिसती तुम है उसका जीवन शोर लिए।

निरीह वेदना नहीं भली है कहो कौन यह बतलाएगा,
मौन त्याग प्रतिकार करो अब अग्नि-लहक हिलोर लिए।।

छलक रहे तेरे नयना ऐसे ज्यों बरस रहें हों सावन-भादो,
विरह वेदना में तुम जलती ज्यों तरस रहे हों सावन-भादो।

कितने ही दिन देखे ऐसे जब पतझड़ बाद वसन्त ना आया,
तुम आये कुछ ऐसे किन्तु ज्यों झुलस रहे हों सावन-भादो।

मर-मर जाऊँ प्रेम-अगन मैं हाल किसको बताऊँ सखी री,
नीलगगन आंखों से छलके ज्यों हुलस रहे हों सावन-भादो।

मत पूछो क्यों खनके पैजनियाँ सुर्ख होंठ गुलाब सखी री,
मैं तो वारी जाऊँ प्रियतम ज्यों फुलास रहे हों सावन-भादो।

रिमझिम-रिमझिम बदरा बरसे तरस रहे व्याकुल मन प्राण,
चल आज कह दूँ मैं अपनी ज्यों सरस रहे हों सावन-भादो।।

-विशेष अनुरोध-

प्रिय बन्धुओं, सादर विश्वकर्माभिवादन!

आप सभी जानते हैं कि ''**विश्वकर्मा किरण**'' हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशन के 20वें वर्ष में चल रही है, जो समाज के अधिकांश समाचारों, विचारों और लेखों के साथ आप सभी के बीच एक पहचान बना चुकी है। पत्रिका ने समाज के हर छोटे-बड़े समाचारों, लेखकों के विचार, समाज के कवियों और साहित्यकारों को तवज्जो दिया है। अधिकांश पाठक और शुभचिन्तक यह अच्छी तरह जानते हैं कि समाचारपत्र अथवा पत्रिका प्रकाशन का कार्य बहुत ही कठिन है। प्रकाशन में बहुत खर्च आता है जिसका संकलन बहुत ही कठिनाई से हो पाता है, इन्हीं परिस्थितियों में कभी-कभार प्रकाशन बाधित भी हो जाता है। प्रकाशन बिना आप सभी के सहयोग के नहीं चल सकता। आप सभी से अनुरोध है कि सदस्यता के अलावा भी समय-समय पर यथासम्भव पत्रिका का आर्थिक सहयोग करते रहें जिससे प्रकाशन निर्बाध रूप से चलता रहे।

सहयोग राशि इस खाते में जमा करें-

Account Name	:	VISHWAKARMA KIRAN
Account No.	:	4504002100003269
Bank Name	:	PUNJAB NATIONAL BANK
Branch	:	SHAHGANJ, JAUNPUR (U.P.)
IFSC Code	:	PUNB0450400

Er. R.K. Sharma

9839043150
9415438554

Email: kumarfab@rediffmail.com

Kumar Construction & Engineers

Appro. Govt. 'A' Class Contractor Civil & Mechanical
Specialist in: Steel Building Construction
Deals in: Civil Sanitory, Electrical & Fabrication Erection

M.I.G. 'C'-759, 760, Barra-8, Kanpur-208027

Tel. (Off.): 022-25952102
Cell: 09821243732
09324092819

Balgovind Sharma (Bachhan)

VIJAY ENTERPRISES

Specialist In: Blow Moulds, Dies & Patterns

38, Shiva Estate, Next to Tata Power House
Lake Rode, Bhandup (W) Mumbai-400078
E-mail: blow.mould@hotmail.com

ShantiLal Gehlot
Mob.- 9819287799

Kailash
Mob.- 9773000649

Shiv Shakti Interior

*Interior
*Designer
*Consultant

B-150, Shahavi Colony 1st Flour Near Costom Shop
Navghar Road Mulund (E) Mumbai-400081
E-mail: shivshaktiinterior@gmail.com

विश्वकर्मा किरण हिन्दी साप्ताहिक

SHIV SEVAK VISHWAKARMA

National Working President

AKHIL BHARTIYA VISHWAKARMA MAHASABHA

Chairman & Managing Director

Spectrum Broadcast Infrastructure Services (P) Limited

Regd Office: E-191A, Street No.-11, Main Bharat Vihar Road, Rajapuri, Uttam Nagar, New Delhi- 110059

Phone: 011-28567436 Fax: 011-28567437 (Delhi)- 09999007448, 09999337448, (U.P.)- 09454305700, 08400305700

website: www.sbispltd.com E-mail: sbis@spectrumbroadcast.net, s.s.sharma@spectrumbroadcast.net

R.N.I. No.- UPHIN/2000/01157

जौनपुर, 28 जुलाई, 2019